रक्तपित्तकोदूरकरताहैघीतैलऔर चरबीऔरमज्जा बायुको दूरकरनेवाली है पहलेसे दूसरा अधिक है ॥ इतितैलवर्ग्गःसमाप्तः(अथमद्यवर्ग्गः) मद्य ।हाला। सुरा।सुण्डा।मदिरा।वारुणी। वन्धोत्तमा ।बल्या। देवसृष्टा(गुण) पित्ताको पैदाकरैहै सरहैरोचनहै दीपनहैबिदाहीहैमूत्रकोविष्टाको पैदाकरैहैतेजहैकफको बायुकोखोवैहैविधिसेभोजनकेसाथपीवेतो अमृतकी समानहै तरहै पीवेतोरोगोंको पैदाकरतीहैबहुतपीवै तोबिषकीसमानहै औरअंगूरकीमदिराबिदाहीनहीं हैरक्तपित्तकीबीमारीमेंगुणकरैहैबलपुष्टिको करतीहै लोहूकोबवासीरको दूरकरतीहैऔर महुवेकीमदिरा मेंउससेथोड़ेगुणहैंखजूरकी मदिराबादीहैऔरवैसे हीशालीकीपीसीहुई जोदारूहै रुचिकरैहैकफको हरतीहैहलकीहैपुनर्नवाऔरशालीकीदारूभारीहैआयुर्दाबढ़ावैहैपुष्टहैचरबीकफको पैदाकरतीहै काबिज़ हैसूजनकोगोलाकोबवासीरको संग्रहणीको सूज़ाक कोहरतीहैऔरसुराकी तरहवारुणीभी हलकीहै पीनसकोअफरेकोशूलको हरतीहै इसमेंमण्डकी सुरा अच्छी और उसमेंकादम्बरी औरजंगल नीची है औरजंगलकीभांतिमद्रोघनाहै औरजंगलीका सार पक्कीसकहावैहै सोमनको प्रसन्नकरतीहैअफरागोला बवासीरको छर्दिको अरोचकको बायुकोहरैहै दीपन

हैंअफरेको हृदयकेदर्दको शूलकोदूरकरतीहै औरका-
दम्बरीभारीहै पुष्टहै दीपनीहैबादीहै जंगल कफको
दूरकरतीहैकाबिज़है सूजनको बवासीरको संग्रहणी
कोइनसबकोदूरकरतीहै औरमेदकमीठाहै बलकरैहै
बन्धेजकरताहैठंढाहैभारीहै पक्कसजो बिनाछालकी
काबिज़हैबायुकोबढ़ावैहै किसवक बायुकोदूरकरताहै
दिलको अवगुण करैहै भारीहै औरईष आदि सुरा
पाण्डुरोगकोसूजनकोबवासीरकोपित्तकोलोहूकोक-
फकोकुष्ठकोजीतैहैकुछएकबायुको करैहैदीपनी है
रोचनीहैहलकीहैऔरयवोंकोपीसके.करीहुईदारूयव
सुराकहावे है औरकान्तोली औरकोहलीऔरमैरेय
येधानोंकीआसवऔर सुरा दोनों एक भाजनमेंरक्खे
उसकोसंधानकहतेहैंऔरधावेकेफूल और गुड़ और
धानीकापानीइसकीबनीहुई भारीहैऔरसबसुरारू-
खीहैकाबिज़हैत्रिदोषको करतीहैऔरकोहलीउसीके
तुल्यहैपुष्टहैअग्निको मन्दकरैहैऔरमैरेयपुष्टहैबल-
दायीहैभारीहैसरहैऔरसबसेबनी जोमदिराहोयउ-
सकोमधूलककहैहैंभारीहैमीठीहैचिकनीहैवीर्य और
कफकोपैदाकरतीहैऔरशर्कराकीदीपनहैमीठीहैपा-
चनहैरोचनहै हलकीहै स्त्रीबिलासकरनेवालीहै बायु
शोकबस्तिबिकारको दूरकरतीहै और मध्वासवहलकी
हैखुश्कहै कुष्ठकोप्रमेहको विषको दूरकरतीहै गुड़की

अग्निको बढ़ाताहैरंगकोबलको बढ़ावैहै करुईहै और तिक्तवापुष्टहैमीठीहै मूत्रको विष्टाको बायुको खोले हैऔर इसकेरसको पकाकेकरे तोउसको सीधु कहतेहैं औरकच्चे रसकीबनीहुई शीतकहावै है सीधु श्रेष्ठ है आवाज़ कोसफ़ाकरैहैअग्निको बालकोरंगकोबढ़ावै है बायुको पित्तको करतीहै दिलकोकुव्वतकरैहैचिक नीहै रोचनहै कब्ज़कोचरबीकोसूजनकोबवासीरको शोकको उदररोगकोकफकोजीतैहैऔरशीतरसमेंइ- ससेथोड़ेगुणहैं लेखनहै औरजामुनकारसऔरगुड़- की क़ाबिज़है अभिष्यन्दीहैकसैलीहै बादीहैअरिष्टहै और आसवऔरसाधिकेगुणऔरकर्मोंकोजानकेक- रतेहैंऔरनईदारूअभिष्यन्दीहैत्रिदोषको पैदाकर- नेवालीहै सरहै दिलको अवगुणकरतीहै पुष्टहैदाहीहै दुर्गन्धीहै निर्मलहैभारीहै गर्महै कृमिकोकफकोबायु को हरैहै दिलको नफ़ाकरतीहै(गुण)भारीहै हलकीहै स्रोतोंको शुद्धकरतीहै सतोगुणवालेदारूपीकेगावै हैं और रजोगुणी पुरुषोंको साहसबढ़ावैहै औरतामसी खोटेकर्मकरैं बहुतसोवैं॥इतिमद्यभेदः (अथतूत्रनाम वर्गः) सफ़ेदकफकोदूरकरतीहै तेजहै गर्महै हलकीहै रोचनहैपाचनहैपाण्डुरोगकोकृमिको दूरकरतीहैखु- श्कहैभेदनहैरक्तपित्तकोकरैहैगुड़कीलालऔर सफ़ेद दारू पहिलीसे दूसरी बहुत भारी है अभिष्यन्दीहै

और सौवीर और मारंमीलत्रिदोपको जीतेहैं काजीकी पाचनहै रोचनहै हलकीहै और सौवीर कच्ची व पक्की यवोंकेतुषोंकी और गेहूंकी सुरा खट्टी सौवीर कुरुई के तुषोंके पानकी दीपनहै दिलको कुव्वतकरै है पाण्डुरोगको कृमिको दूरकरतीहै सौवीरक संग्रहणी को बवासीरको दूरकरती है भेदनहै दीपनहैहलकी है स्पर्श में बायुको हरतीहै स्पर्शसे दाहको हरै है पीनेसे बायुको दूरकरतीहै ॥ इति मद्यभेदः (अथ मूत्रवर्गः) मूत्रगायका,हाथीका,भैंसका,घोड़ीका,बकरीका,भेड़का,गधेका,ऊंटका, आदमीकेपेशाबपाचनहैं दीपनहैं हलकेहैं सलोनेहैं खट्टेहैं तेजहैंखुश्कहैं धातोंकोशुद्धकरतेहैंपित्तको पैदाकरतेहैंकरुवेहैंदिलकोकुव्वतकरतेहैंभेदीहैंबायुकोदूरकरतेहैं बवासीरको गोलेकोशोफोदरकोकफकोकृमिकोकुष्ठकोपाण्डुरोग को अफरेको बिषको शूलको अरुचिकोदूरकरतेहैं गोमूत्रसारेमूत्रयोगोंमेंअच्छाहैहाथीकामूत्रबिषकोबवासीरकोकुष्ठकोगोलेकोकृमिकोजीतेहै भैंसकामूत्र सूजनको गुल्मको बवासीरको पाण्डुरोगकोप्रमेहको खोताहै घोड़ेकाभेदीहैकफकोदाहकोकृमिकोजीतेहैं बकरीका गोलेकोबिषकोसूजनकोदमेकोकमलबायुकोपांडुरोगकोहरताहै भेड़कासूजनकोगोलेकोबवासीरकोप्रमेहको विष्टाकेविबंधको दूरकरैहै गधेका

काबिज़है प्रमेह कुष्ठ उंमाद कृमिको हरताहै ऊंटकासू-
जनको कृमिशूलउदररोगकोदूरकरैहै आदमीकामूत्र
जराकरैहै नित्यसेवनकरैतोरसायनहै गायबकरीभैंस
कामूत्र स्त्रियोंको रसायनहै और गधा ऊंट भैंसघोड़े
कामूत्रमरदोंको हितहै (इति मूत्रवर्ग्गः)॥

इतिश्रीमदनपालविरचितेनिघण्टेद्रव्यवर्णनो
नामाष्टमोवर्ग्गः ८॥

(अथ ईषनाम) इक्षु। महारास। वेणानिस्सृत।गु-
ड़पत्रक। तृणराज। मधुतृण। गण्डीर। मृदुपत्रक।
ह्रस्वमूल। लोहितेक्षु। पौण्ड्रक। पंड्रक। रसाल। सुकु-
मार। कृष्णेक्षु।भारक (गुण) मीठीहै भारी है ठण्डी
है पुष्टहै चिकनीहै बलदायीहै बायुपित्तकोखोतीहै
मूत्रकोकृमिकीकफको पैदाकरतीहैजड़ उसकीबहुत
मीठी है औरबीचकाथोड़ामीठा है औरगांठसलोनी
है और लालगांडा भारीहै ठण्ढाहै पुष्टहै कफ पैदाक-
रताहै सरहै कालाभी वैसाही है बायुको करैहै ठण्ढाहै
और कोशकार भारीहै ठण्ढाहै रक्तपित्त क्षयीको दूरकरै
है सूचीपत्र नीलापौंड़ा नैपाल दीर्घपत्रक बादीहै कफ
पित्तको हरताहै और इनका पेराहुआ जो रसहैसो पित्त
को और लोहूको खोताहै॥ इति ईष (अथ गुड़गुण)
गुदाके रोगों को कमलबायु को शोफ को प्रमेह गोला
पाण्डुरोग हलीमक बायु पित्तलोहूराजयक्ष्मा इतने

रोगोंकोगुड़खोताहैभोजनकीरुचिपैदाकरताहै और खांसीवशोफऔरगुंदाकेंनिकसनेकोखोताहैगुड़औं-टायकेबनायाहोयउसकोजावसशर्कराकहतेहैं और फूलोंकीपुष्पसिताकहावेहै और गुड़केरसकाजोहोय उसकोमत्स्यण्डीकहैहैंकाबिज़हैबलकरैहै भारीहैपि-त्तकोबायुकोखोताहैऔरसितोपला सरहै भारीहैबायु को पित्ताकोहरैहै ठंढीहै(निचार्तन्नाम) खंडसष्प रुचि करैहै पुष्टहै बलकर्ताहै(खंडनामानि)माधवी।शर्करा (गुण) खुश्कहैकफकोहरैहैभारीहै. (मधुशर्करानाम) प्रवासा। शर्करा (गुण) ठण्ढीहै कफ पित्तको जीतैहै पुष्पसितादिलकोकुव्वतदेतीहै रक्तपित्ताकोहरैहैभारी है(पुष्पवासितशर्करानाम)रावभारीहै अभिष्यन्दीहै दोषलहैमूत्रकोशोधैहै(रावनाम)मधूकाफाणत(गुण) राब मूत्राशयको अवगुणकरैहै बायुपित्ताको पैदाकरै है और मधूकरी हृदय को गुण करै है गुड़ खारी है गुड़मीठाहै बायुको पित्तको अग्निको करैहै सरहै बल करैहै कृमिको कफको करताहै मूत्रको लोहू को शुद्ध करताहै पुराना गुड़ पुष्टहै हलका है पत्थ्य है अग्नि को करै है पुष्टाई करता है (इतिगुड़वर्ग्गः) ईष की जितनी बस्तुहैं तिनमें जितनी निर्म्मलहों उतनीही गुणदायकहैं प्यासको दाहको मूर्च्छाको पित्तको लो-हूकोविषकोमोहकोहरैहैंठंढीहैंभारीहैं मीठीहैं कुव्व-

तीहैंचिकनीहैंवायुको हरैंहैं सरहैं ॥ इति इक्षुवर्ग्गः ॥
(यद्वापाठान्तरम्)शर्करानामानि श्रममत्स्यण्डिका। शर्करा।सुरभिसिता।अहिक्षत्रा।शिक्ता।सुधाशुभ्रा। सितोपला (गुण) मीठीहै दिल को कुव्वत करती है बहुत भारी नहींहै बहुत हलकी भी नहीं है बायु को पित्त को हरतीहै ठण्ढी है तरहै शर्करा ठण्ढी है पचने में मीठीहैसरहै दाहको प्यासको छर्दिमूर्च्छाकृमिहरतीहै बायुको कफ को पैदा करती है पुष्ट है तृष्णा को अतीसार को जीते है नेत्रोंको गुण करतीहै राब भारीहैअभिष्यन्दीहैपुष्टहै कफकोवीर्यकोपैदाकरती है बलकरतीहै भारीहै तरहै बायुको दूरकरतीहै मूत्र को शोधेंहै पित्तको बहुत नहीं करतीहै चरबीको और कफको कृमिको करैहै भारीहै गुड़ पित्तको दूरकरता है मीठाहै बायुको हरता है लोहू को दूर करैहै और पुराना गुड़ बहुत गुणदायी है पत्थ्य है खारी है मीठा है बुद्धि बढ़ावै है सुज़ाक को दूर करता है लोहू पित्त को शुद्ध करताहै बायुको हरताहै कफ चरबी को हरताहै पुष्टहैबलकरताहै उदावरत्तको हरैहै मत्स्यण्डी शर्करा खण्ड विधली ठण्ढीहैतरहै बहुत भारी है उत्तरोत्तर रक्तपित्त को दूरकरतीहै प्यासको श्रम कोनाश करती है जितना जितना मिठास जिसमें अधिकहोय तितनीतितनी चिकनी भारीहोतीहै (श-

र्करागुणखण्ड़काकसगुणनामकथ्यते) शर्करन्याम
धुभवा। माधवी। मधुशर्करा। माक्षीकशर्करा। शीत्थ
कामदनोद्भवा (अलग२गुणकहेहैं) मधुशर्करा। छर्दि
अतीसारकोदूरकरतीहैशर्करामीठीहै दिलकोकुव्व-
तकरतीहैकसैलीहैतेजहैकफकोदूरकरतीहै दाहसतह
कोहरतीहैछर्दिकोमूर्च्छाकोप्यासको हरतीहै खुश्क
हैमीठीहैराबबायुपित्तकोकरतीहैकफहरतीहै पचने-
मेंभीमीठीहैकसैलीहैऔरमूत्राशयकोअवगुणकरती
है(अथमधुभेद)गोटेफूलोंकेरसकोभीशहताक्षिक क-
हतेहैंतिसकेइतनेभेदहैंमाक्षिक। पैत्तिक।क्षौद्र। भ्रामर।
माक्षिक तेलकीतरहकाहोयहैऔरपैत्तिकघीकी तरह
काऔरक्षौद्रभूरेरंगका भ्रामरफटककीतरहकाहोय-
है(गुण) शहदठंढाहैहलकाहैरूखाहैकाबिज़हैलेखन-
हैनेत्रोंकोगुणकरैहै दीपनहैफोड़ेकोसाफ़करताहैभर
लावैहैरंगको अच्छाकरताहैबुद्धिकोबढ़ावैहैपुष्टहैरो-
चनहैकुष्ठकोबवासीरको खांसीको पित्तकोलोहूकफ
प्रमेह कृमि मद प्यास छर्दिहिचकीअतीसारदिलकी
पकड़को दाहकोक्षयीकोदूरकताहै बातलहै (मधुके
अलगअलग नामगुण) मधुनेत्रोंके रोगकोहरता है
पैत्तिक और हलकाहैखुश्कहै गर्म्म पित्त दाह लोहू
बायुकोपैदाकरैहैक्षौद्रमाक्षिकका भीगुणइसकेतुल्यहै
विशेषकरके प्रमेहको दूरकरैहैभ्रमऔररक्तपित्तकोदूर

करताहैमूत्रकोथोड़ाकरताहैभारीहैनयाशहदअभिष्यन्दीहै तरहै कफकोहरैहैपुरानाकाबिज़है खुश्कहै चरबीको दूरकरता है लेखनहै औरबिषयुक्त फूलोंके रसका जोशहद सोविषकेसमानहैं अग्निसे पकाया जोशहदसोयोनिरोगकोहरताहैगरमीकेसमयमेंऔरगर्मदेशमेंगर्मऔषधोंसेमिलावेछर्दिमें गर्मकरकेन देनाचाहिये(अन्यमधुकेनाम औरगुण)मदनमधु। जशिकथमधु। क्षष्ठमधु। क्षितिमदन मीठा है तरह मूतको दूरकरताहै फ़ोड़ेको भरलावैहै टूटेकोजोड़ैहै बायुको कुष्ठको विसर्पको लोहूको दूरकरताहै॥

इतिश्रीमदनपालविरचितमदनविनोदे मधुवर्गःनवमः ९॥

अथ (शालीनाम) शाली। रक्तशाली। व्रीहीय। षष्टिकऔरमूंगकोआदिलेके दुदालेऔर शैवकंषको आदिलेतृणधान्यक औरक्षुद्रधान्यकऔरसुधान्यकऔरछकधान्यऔरयवकोआदिलेकेहैं-रक्तशाली। लोहितशाली।गरुड़शक।नाशक।सुगन्धक। महाशाली।कलम।कलामला।रक्तशाली।दीर्घश्रुवा। पुंडमाहिष। मस्तक।पूर्णचन्द्र। महाशाली।पुण्डरीक। प्रमोटक। पुष्पाटक।शीतभीरु। शकुहृता। पाण्डुगौर। सारिवाख्य।रोधपुष्प। सुगन्धिक। हायन। दीर्घनाल। महादूषक दूप (शाली गुण) शाली मीठे हैं तर हैं

बलकरैहैविष्ठ थोड़ीकरैहैंपित्तको दूरकरतेहैंथोड़ीक-
ब्ज़करतेहैं कफ पैदाकरैहैं मूत्रपैदाकरैहैंहलकेहैंठंढेहैं
और रक्तशाली तिनमें श्रेष्ठहैं बलकरैहैं रंग अच्छा
करैहैं त्रिदोषको जीतैहैं आंखोंको गुणकरैहैंमूत्रबहुत
लावैहैं वीर्य बढ़ावैहैंप्यासको ज्वरकोखोवैहैं विषको
फोड़ेको खोवेहैंऔर महाशालीबहुत बलदायीहैंरक्त
शालीकीतुल्यहैंऔरषष्टकहैंमीठेठंढेहैंहलकेहैंपुरीष
को बन्दकरैहैंबायुपित्तकोखोवैहैंऔर गुणशालीकेसे
हैं और षष्टिक कांगुकपोतप्रमोटकमुकुन्दकमहाष-
ष्टिक केदारपुष्पा करुवक इनको आदिदेके इन सब
में षष्टिक श्रेष्ठहैं और ये सब तलकेहैं चिकनेहैं त्रि-
दोषकोजीतैहैंपचनेमें मीठेहैं क़ाबिज़हैं बलकरैहैंरक्त-
शालीकीतुल्य गुणहैंऔर कृष्णव्रीहीय तरिककुकु-
यण्डक पाटलशालीमुखशालीधान्यनन्दीजन्तु मु-
खव्रीहीय मीठेहैं ठंढेहैं षष्टिकाकी समान गुणहैं और
इनमेंकृष्णव्रीही श्रेष्ठहैंऔर जलीभूमिमें जो चावल
पैदाहोयसो हलकाहैखुश्कहैंकफकोदूरकरताहैऔर
स्थलमेंजोउपजेसोमीठाहैपित्तकफको खोवैवायुअ-
ग्निको बढ़ावै केदारबायुपित्तको खोवैभारी है कफको
वीर्यको बढ़ावैहैरोप्यओरअतिरोप्यहलकेहैंमूत्रला-
वैहैं और छिन्नरूढ़ठंढेहैं खुश्कहैंपित्तकोखोवैंहलकेहैं
इतिशालीभेदः॥ (अथगेहूंनाम)गोधूम। सुमनाक्षुद्र।

मधूली। पिपीतक। नन्दीमुखी स्वल्पम्रो धूम। लोके-
श। बीस्यक (गुण) मीठाहै ठण्ढाहै वायुपित्तकोखोवै
भारीहै कफवीर्यको पैदाकरताहै बलकारीहै चिकना
टूटेको जोड़ैहै और मोटेसेछोटेमें थोड़ेगुणहैं (जौंके
नाम) यव। शुचि। तीक्ष्णशूक। निश्शूक। अतियव (गुण)
यव कसैलाहै मीठाहै ठंढाहै पित्तकफलोहूको जीतै है
और फोड़े में पथ्यहै तिलों की तरह रूखाहै बुद्धिको
अग्निको बढ़ावैहै लेखनहै विष्टाकोबन्दकरै चरबीप्या-
सको दूरकरताहै बहुतवायुमलपैदाकरैहै रंगको अच्छा
करैहै चैंपदारहै अतियवमेंइससेथोड़ेगुणहैं इतियवः॥
(अथसैंबनाम) सैंब। मूंग। चणा। उर्दशा (तीनमटर)
मसूर। चक्रमांगल्य। मोठ। त्रिपुट आदिलेकै दोदाल
वालेजोअन्नहैं मीठेहैं रूखेहैं कसैलेहैं पचनेमें करुवे हैं
बातलहैं कफपित्तकोदूरकरतेहैं मलमूत्रकोबन्दकरते
हैं मूंग और मसूर बिनासारेअफरा करतेहैं सैंबबि-
ष्टंभीहै प्रमेह दृष्टिको दूरकरैहै बायुपित्तको पैदाकरैहै
निर्म्मलहै भारीहै दिलको कुव्वतकरै खुश्कहै पचनेमें
करुवीहै काली सुफेदकई भांतिकीहैं (अथमूंगनाम)
मूंग। बलाट। मांगल्य। हरीसारद। प्रचेत। वसुक
माधव। बनमुद्रा। तुंबर। मद्दु और षाण्डक (गुण) मूंग
खुश्कहै हलकीहै क़ाबिज़है। कफपित्तकोहरैहै ठंढी है
मीठीहै थोड़ीवायुपैदाकरैहै नेत्रोंको गुणकरैबनमूंग

भी इसकी तुल्य है हरीमूंग श्रेष्ठहै और इसका साग तेजहै उत्तमहै (अथउर्दनाम) मांष।वीर्यकर। धारीचंचल। राजमाषक (गुण) उर्द भारीहै मीठाहै पचनेमें चिकनाहै पुष्टहै वायुको दूरकरताहै गर्म बलवीर्यको पैदाकरैहै कुव्वतकरै है मलमूत्रको जुदाकरै है स्त्रियोंके स्तनमें दूधको बढ़ावै है चरबी पित्तकफको पैदा करैहै बवासीर लकवेको शूलको इतनेरोगोंकोखोवैहै (अथराजउड़द) राजउड़दमीठाहै खुश्कहैकसैलाहै हलकाहै काबिज़है बादीहै स्तनोंमेंदुग्धबढ़ावैहैबिष्टा को बहुत पैदाकरैहै रुचिपैदाकरताहै (मोठनाम) मकुष्टक। मकुंष्ट। निष्पावबल्लक (गुण) बादी है खुश्कहै कफपित्तको हरताहै हलकाहै छर्दिकोदूरकरै है पचने मेंमीठाहै कृमि पैदाकरै ज्वरहरे (निष्पाव गुण) निष्पाव वायुको पित्तको लोहूको दूरकरै स्तन में दुग्ध बढ़ावे बिदाहीहैगर्महैभारीहैसूजनकोकफकोउत्पन्न करैवीर्य्यको नाशकरता है (अथमटरनाम) वर्तुल। सतीन। रेणुस्वल्प (वर्तुलगुण) ठंढीहै काबिज़है कफ को पित्तकोहरैहै हलकीहैपचनेमेंमीठीहै खुश्कहैहरेणु भी उसीकीसमानहै (कलावनषोड़) कलाय। षण्डिक त्रिपुट। क्षुद्रषण्डिक (गुण) कलाय कफपित्तको हरताहै काबिजहै ठंढाहै बहुतबादीहैत्रिपुटमेंभी ऐसेहीगुणहै और उसकासागकफपित्तहरैहै (अथचणानाम) चणा-

क।।हरिमंथ। वाजिमंथ। अश्वजीवन(गुण)ठंढाहै खुश्कहै पित्तलोहू कफकोहरैहैहलकाहै कसैलाहैवादीहै पुंसत्वको बढ़ाताहै(अथमसूरनाम)मसूरिका। मसूर। मंगल्या पाण्डुरा(गुण)मीठीहै पचनेमें काबिजहै ठंढीहै हलकीहै कफपित्तको जीतैहै रंगकोअच्छाकरैहैसाग हलकाहैतेजहै(अथकुलत्थनाम)कुलत्थ।चक्रिका।ला लीवनज(चक्रगुण)कुलथी करुवीहैपचनेकेसमयकफ पित्त लोहूको करैहै हलकीहै विदाहीहैगरमहैदमेको खांसीकोकफकोबायुकोखोवैहैअफरेकोपथरीकोखोवै पीनसको दूरकरै पसीनेकोबन्दकरहै गोला चरबी कृमिको खोवैहै बनकुलथीठंढी है नेत्ररोगकोहरैहै(अथतिलनाम) तिलपूर्त। तिलफल। तिलपिंड। जन्ती लोचन। जात। आढ़की। तुवर (गुण) काबिज़हैभारी हैमीठहै चिकनाहैकफपित्तकोपैदाकरैहैबलकरैहैबालोंकोबढ़ावैहै स्पर्शमेंठंढाहैफोड़ेकोअच्छाहैमूत्रकोघटावैहै बायुकोहरताहैअग्निकोबढ़ावैहैतिनमें काले तिलश्रेष्ठहैंवीर्यकोबढ़ावैहैंऔरसुपेदमध्यमहैंऔरतरहकेहीनहैं और तुवरी काबिज़हैठंढीहै हलकीहै कफ बिषलोहूको जीतैहै (अलसीनाम) अलसी।मस्टणा।नीलपुष्पी। चेलुउमा। क्षुमा (गुण) वीर्यको दृष्टिको हरतीहै चिकनी है गर्म्महै बायुको दूरकरती हैभारी है (कुसुमनाम) कुसुम्भ। पावकपीत। अलक्त। वस्त्र-

रजन और उसके बीज किरट। लट्टा शुद्धा पद्म बर (गुण)बादी है सोजांककों रक्तपित्ताको कफको हरता है औरकिरटअलसीकेसमानहै विशेषकरकैबिषको हरै है (सरसों राई नाम) कुसुम्भके बीज। सर्षप। स्नेह। भूतघ्न। तुन्तुभ। सिद्धार्थ। श्वेतसर्षप। राजिका। आसुरी। राजी। तीक्ष्ण। कृष्णसर्षप (गुण) सरसों कफको बायुको खोवै है तेजहैगर्महै रक्तपित्त को करै है कछु रूखाहै अग्निकोबढ़ावैहैखुजलीकुष्ट को कृमिको दूरकरैराजिकाइसहीकीसमानहैबिशेष करके तेजहै (शणनाम) शण। मातुलानी। जन्तुज। महाशण। मातुलानीज (गुण) ठंढी है भारीहै कबिज़ है उसके फूल पेरेको हरते हैं (बारादकंगुभेद) कंगुण्या। माकनी। बार। बरक। उद्दाल। नर्त्तक। करद्विका। तोद्रपर्णी। कोद्रव। मधूलिका। नन्दीमुखी। बेणुर्यवा। प्रियंगु। कोरदूषिक। गवेद्यका। नल। नाला। कुमुद बरद। तृणधान्य (गुण)हलकाहैपचनेमेंमीठा है लेखनहै खुश्कहै गर्महै बातपित्तकोबिगाड़ैहै(पीततन्दुलिका) कंगुप्रियंगु। कुर्व्वरी। सितकंगु। मुसटी। रक्तकंगु। शोधिका। चीनक। काककंगु। श्यामाक। तृणबीजक (सावकनाम)कोदों। कोद्रव। कोरदूषक। उद्दाल। बनकोद्रव। प्रियंगु (गुण)पित्तकोजीतै है पुष्ट है टूटा जोड़ै भारीहै(श्यामाकगुण)श्यामाक

शोषणहै ठण्ढाहै खुश्कहै पित्तको कफको दूरकरताहै कोद्रव ठण्ढाहै काबिज़है बिष पित्त कफको जीते है (यवनालं)देवधान्य। जुहूलि। जनकानल(गुण)यवनालमीठावठंढाहै बातपित्तकफको जीतेहै(जोड़नी) बजरी।दुर्जरी।बात पित्तप्रकोपनी। गवेधुका। कर्षिणी गोजिह्वा। कर्षिका। गवेधुका (गुण) करुवीहै मीठीहै दुबला करै। गिरड़िया॥

इतिश्रीमदनपालविरचितेमनविनोदे निघण्टेधान्यवर्गः १०॥

(आहारनाम)आहार। भोजन। दग्धिनघ। संबेमन(गुण)आहार बलको करैहै शिताब और ओजको स्वरको उत्साहकोबुद्धिकोस्मृतिको पैदाकरताहै भक्त भातमन्धे स्तुतिरसान्नकूरदादि बिरोदन(गुण) भातअग्निकोकरताहै पत्थ्यहै तर्पणहैमूत्रबहुतलावैहै हलकाहै धोयाहुआगरमहैबिशदहैगुणदायीहैबिना धोयाठंढाहैभारीहैपुष्टहैकफपैदाकरैहैभूनेचावलोंका भातरुचिकोकरैहैसुगन्धितहै कफकोजीतैहैहलकाहै मांसमिलाभातऔर दालमिलाहुआवचिकनेशाकोंका मिलापुष्टहैभारीहैकफकोकरैहैऔररसमेंमिलाहुआ पुष्टहैबलकरैहैबायुकेज्वरकोदूरकरैघोलभातकाबिज़हैसंग्रहणी बवासीरश्रमको दूरकरताहै पाचनहै ठण्ढाहै॥ इति भात॥ ६ गुणेपानीमेंजोऔटाया होय

उसको यवागू कहतेहैं और चारगुणेपानीमें औटावे उसको बिलेपी कहैहैं और सिकथमें मिलेहुये चौदहगुणे में मिलेहुये को मण्ड कहेहैं (पेयादि लक्षण) कवायू। कागू। काबिजहै प्यासको ज्वरको दूरकरताहै बस्तिको शुद्ध करताहै और बिलेपी दीपनहै बलकरैहै हृद्यहै काबिजहै हलकीहै फोड़ेको आंखकेरोगको पत्थ्यहै प्यास को ज्वरको दूर करतीहै (पेयागुण) पेया कोपको रोग को. जीभ चलानेको ज्वरको प्यासको खोवेहै अतीसार को जीतैहै रुचिको बढ़ावेहै अग्निकोकरताहै हलका है दोषको मलको मुलायम करै (मण्डगुण) मण्ड काबिजहै हलकाहै ठंढाहै दीपनहै बुद्धिको समकरताहै पित्तको कफको ज्वरको श्रमको दूरकरताहै (अथवाद्य मण्डलाजामण्डगुण) भूनेयवोंको औटावैसो वाद्यमंड कहावेहै औरधानकी खीलैं औटावै सोलाजामण्ड कहावेहै वाद्यमण्ड हलकाहै काबिजहै शूलअफरे को त्रिदोषको जीतैहै औरपटोलपीपलैं इसमें मिलायके खावेतो नयेज्वरमें पथ्यहै लाजामण्डहलकाहै काबिजहै हृद्यहै पावनदोष्महै (अष्टगुणमण्ड) आधा मूंगचावलमिलावे और कुछ एकपकावे और हींगसेंधानोनमिलावै और त्रिकुटा मिलावै उसको अष्टगुणमण्ड कहतेहैं ज्वरत्रिदोषकोहरताहै लोहूको भूंखकोबढ़ावेहै प्राणकोदेवैहै बस्तिकोशोधैहै (अथमहूयूष) दो

दलअन्नकायूषबनावे १८ गुणेपानीमें, तिनमें मूंगका यूंषउंत्तमहैदीपनहैठंढाहै हलकाहैफोड़ेको कृमिको दाहको कफको पित्तकोज्वरकोलोहूको हरै है (मूंग व आमयूष) मूंगऔरआमकायूषपित्तकोकफको जीतैहैभेदनहैप्यासको दाहकोहरैहैठण्ढाहैमूर्च्छाको श्रमकोहरैहै(अथदाड़िमामलकयूष)अनारदानाआमलेकायूष पित्तावायुकोहरताहैहलकाहै(कुलथीयूष) कुलथीकायूषगोलेकोबवासीरकोकफकोबायुकोपथरीको तूनीप्रतूनीचरबीकोप्रमेहकोहरै अग्निकोकरै सरहै (शुण्ठीमलकयूष) सोंठकी जड़कायूष गलेके पकड़नेकोकफकोज्वरकोदमेको जुकामको खांसीकोचरबीकोअरुचिकोकृमिकोहरैहै (अथचणकयूष) चणेकायूषठंढाहै कसैलाहै रक्तपित्तको जुकाम को खांसीको पित्तको हरताहै (मकूयूष) मोठका यूष काबिज़हैकफकोपित्तकोज्वरकोखोवैहैहलकाहै तृप्त करताहै पथ्यहै हृद्यहै पीनसखांसीको दूरकरता है (कृतअकृतयूष) यूषमेंलवण और घी और करुवी बस्तुमिलैं उसकोकृतयूषकहे हैं जोबिनाइनकेपका वेसोअकृतयूषकहावैहैं औरयूष नामउसका है जो बस्तुको पतला औटावै (सर्व्वयूष) यूषमेंगोरधनियां आमले आदिमिलेहोयँतोपहिलेसेदूसराभारी हैऔर सर और वातघ्न और रुचिकारी है (दाल

(गुण) सैंब आदि दुदंलेअन्नोकोदलकेसूपसेफटकके तुष दूरकरे तिसकोदाल कहतेहैंकाबिज़है खुश्क है औरबिना छिरुकोंकी दालभुनीहुई उससेहलकी है (खिचड़ी) उर्द और तिल औरचावल मिलायके करेतो उसकोखिचड़ीकहतेहैंऔरखिचड़ीकोकृशरा कहतेहैंयहखिचड़ीकाबिज़है वीर्यकोकरैहै बलकरैहै भारीहैपित्तकोकफकोपैदाकरतीहै पुष्टहैमलकोउप- जावैहै बायुकोजीतैहै (खीरनाम गुण) क्षीरेई। पर- मान्ना। पायस। क्षीरतन्दुल। खीरबलकरतीहै धातु पुष्टकरतीहै भारीहैकाबिज़हैरक्तपित्तको दूरकरती है अग्निकोबायुकोदूरकरैहै (खांडवगुण) गुड़आदिकमें आमकेफलमिलावे औरचिकनाईऔरसोंठ मिलावे उसकोखांडवकहतेहैंखांडसोंठफालसेकी खटाईऔ- रनींबूकारसमिलावेमीठाऔरखट्टारसमिलावे उस- कोखांडवकहतेहैंदीपनहैपुष्टहै रुचिकरताहैतेजहहै- द्यहैऔरश्रमकोदूरकरताहै (खंडाम्रखंडामल) आम लआमआदिलेकेपुष्टहैं बलकरतेहैं तर्पणहैंरोचनहैं चिकनेहैंमीठेहैंभारीहैंबहुतगुणदायीहैं (अथसिखरन नामगुण) खांड, दही, सहत, घृत मिरच, इलायचीमि- लायकेमथीहोयऔरकपूरसेखुशबोकरीहो उसकोर- सालासिखरनमार्जिवामर्जिताकहतेहैंवीर्यकोबलको बढ़ावैहैबायुपित्तकोजीतैहैचिकनीहैभारीहैभोजनकी

रुचिउपजावैजुकामकोखोवैहैं(पंन्ना नामगुण)दाखइ-
लायचीफालसाइनकाशर्बतखांडमेंमिलावेऔरमिरच
अद्रककर्पूरचतुर्जातकमिलावेसोशर्बत दो तरहका
खट्टा और बिनखट्टादाख छुहाराऔरमधुक फालसा
केरस यहपंचसारपामकहावेहैं चंदनकाचूराखुशबो-
य के वास्ते मिलावेइसके पीनेसेमूत्रबहुतआवेहैदिल
को कुव्वतकरैप्यासकोमांदगीकोदूरकरैहै जैसीबस्तु
होय वैसेहीगुणहैं पंचसारपित्तको खांसीको दाहको
श्रमकोखोवै और माध्वी दाहलोहू प्यासपित्तको दूर
करताहै फालसेआदिका शर्बतहृद्यहैविष्टम्भी है न-
पुंसक को इमलीका शर्बतप्यासको कृमिकोदाहको
श्रमकोजीतैहै (साट्टकनाम गुण) बिना घृतदही को
मथै औरखांडमिलावै औरत्रिकुटाअनारदानामि-
लावै उसकोसतककहतेहैंसोरुचिउपजावेहैपित्तवायु
को खोवैहैभारीहैदीपनहैतर्पणहैबलकरैश्रमकोजीभ
चलानेकोप्यासकोहरैहै (चूड़ागुण)ठीकरेकेऊपरभुने
अंगारोंपरपकावे उसको मंड्ककहैहैं भारीहैपुष्टहैब-
हुतफैले पतलेहोयँसो मंड्ककहावेहैं जो कछुमोटेहों
पूपलिकाकहावेहैंऔरअंगारोंमेंसेंकैसोअंगारकर्करी
कहावेहैं मंड्ककबहुतगर्महैं पथ्यहैं ठंढेहैं भारीहैंऔर
अंगारमंडककाविज्रहैहलकेहैं त्रिदोषको हरैहैंपोलि-
काकफकरैहै पित्तलहै बलकरैहैवायुकोदूरकरैहैभारी

हैं अंगारककर्करी बलकरैहै पुष्टहै वीर्यको पैदाकरैहैहल-
कीहैदीपनीहैहृद्रोगकोपीनसकोदमेकोबायुकोजीतैहै
(मिष्टान्न भोजनगुण) पीसे चावलोंकेजो भोजन बने
हैं सोबहुतबल नहीं करैहैं विदाहीहैं पुष्टनहीं हैं भारी
हैं गर्म हैं कफपित्तको करैहैंगेहूँकेआटेकाभोजनबल
करताहै पित्तको बायुको हरैहै दोदले अन्नोंके भोजन
बादीहैं कसैलेव ठंढेहैं(माषभक्ष) उड़दके भोजनबल
कारीहैं पित्तको कफको पैदाकरैहैं(गुड़युक्तपक)गुड़के
भोजनभारीहैंधातुबायुको हरैहैं गर्महैंपित्तबायुकोहरैं
हैं (तैलपक्कभोजन)तैलमेंपकायेहुये अन्नबायुको हरैं
(दुग्धपक्कभोजन) गेहूंकाआटावचावलोंकाआटादु-
ग्धमेंसानकेबनावेतोबायुकोपित्तकोहरैहैहृद्यहैवीर्यको
बलको पैदाकरताहै (घिंवरभक्ष गुण) दुग्धमें आटा
गेहूंकामथै औरफैलायले घृतमेंपकावैऔर खांड़मि-
लावैइसकोघृतपूरकहैहैंकर्पूर औरमिरचमिलावैऔर
खोपड़ावखांड़ऊपरडालैवहघृतपूरककहावैहैसोभारी
हैपुष्टहैप्राणको देवैहै बलकरै जख्महरै (गूंझासन्धाव)
मैदाकोघीमेंभूनैऔर मिरचइलायची लौंगकर्पूरका
चूर्णवखांड़मिलावैफिरऔरमैदा उसनकेउसकीटि-
कियोंमेंभरकेघिवमेंतलैफिरउसकोखांड़कीचासनी
मेंपागैउनकोसन्धावकहैहैंमैदाकोसहतमेंउसनकेघृ-
तमेंपकावैऔरनयेघड़ेमेंधरैफिरमिरचऔरइलायची

समेतचूर्णमिलावै कर्पूरमिलावैतो अमृतकीतुल्य है (खाजाभक्षगुण) मैदाको घिवऔरपानीमेंउसनकेप-कावैफिरखांड़की चासनीमेंपकावै औरपानीमेंमैदा-कोपतलीघोले और बिजौरेकेछिलके और अद्रकभरै औरपूयेकी तरहपकावै घिवमेंखांड़मेंपागै (पूपक) मै-दाको गुड़केपानीमेंमिलायकेघोलैऔरघिवमेंफैला-यकेपकावै (दधिपूपक) चावलकेआटेकोदहीमेंउसन के घिवमेंपकावैखांड़कीचासनीमें लपेटै (विष्यन्द-न) सन्धाव। मधुशार्षं। पूपक। मधुपूक भारी है और पुष्टहै हृद्यहै पित्तवायुको हरैहै दही और दूध पका-यके अर्द्धभागरक्खै फिरिलाल चावलऔरतिल मि-लावैफिरिपियाल पनसकेबीजमिलायके पकावै दूध घिवखांडमिलावैइसका नामविष्यन्दनहै देवतोंको दुर्लभहै पुष्टहै पित्तवायुकोहरै है भारीहै (लपसी) मैदाकोतत्तघृतमेंभूनै औरखांडडालैऔरपानीऔर मेवा उसमेंमिलावैइसकोलपसीकहतेहैंपुष्टहैबलक-रैहैवायुपित्तको दूरकरतीहै भारीहै (लड्डूभक्षगुण) फेनिका। पुटनी। शुभ्रा। वीर्यकोपित्तकोहरैहैमोदक औरलड्डू अनेकतरहकेहैं औरदहीदूधनष्टदुग्धमैदा औरउड़दकी पीठीकेखानेऔर ज़िमीकन्द अद्रक औरपेठाशालकऔरमांसमच्छीइनकोआदिलेकेब-हुतविधिसेखानेसूपशास्त्रमेंसेजानिलीजिये मोदक

पुष्टहैंबलकरैंहैंपित्तबायुकोहरतेहैं (खोलबड़ा) उड़द मूंगकी पीठी की बड़ी और जैसा जिस अन्नका गुणहो वैसाहीउसकीबड़ीबड़ेकागुण है उड़दके हृद्यहैं पुष्टहैं वायुहर्त्ता भारी क़ाबिज़ हैं और घोल बड़े बिदाही हैं बायुको हरै हैं (काँजीबड़ा) काँजी केबड़े दृष्टिकोदूर करैं दोषलहैं भारी हैं (तुषाबुबुटक) तुषकेपानीकेबड़े रुचि करतेहैं पित्तलहैं कफबायुको जीते हैं (रणरी) रणरी वीर्य को बढ़ावै है खुश्क क़ाबिज़ है (सुहाली) सुहाली भारी हैं पुष्टहैं रुचि उपजावै हैं दोषोंको हरैं हैं (जलेबी) गेहूंकी शुद्ध मैदाको दूध में घोलरक्खै जब खट्टी होजाय तब एक बासन में छेदकरके भरै और छेदकी राह से उसको फिराय २ के गर्मघीमेंछोड़ता जायपकावैफिरउनकोनिकासके खांड़कीचासनीमें डालदेवे इसको कुण्डलिकाकहैहैंपुष्टहैकान्तिबलको बढ़ावैहैधातुको बांधैहैइन्द्रियोंकोतृप्तकरै घूंघरीगेहूं की घूंघरी खुश्कबादीहैं (मन्थगुण) नये जवोंका तुष दूरकरके भुनावै उसकोआपपीसे उसकोसत्तूकहतेहैं इसमें घृत मिलायके ठंढेपानीमें घोले बहुत पतलेन बहुत गाढ़े उसको मन्थकहैहैंमन्थतुरतहीबलकरैहै और पीछे बलको दूरकरैहैप्रमेहप्यासक्षयीछर्दि कु-ष्ठदाहश्रमकोजीतैहैऔरदाख और खांड़में मिलावे तो पित्त लोहूवायुको जीतैहै और दाख और सहत

मिलावेतोबलकरै औरश्रमकोमदकोजीतै(जौसत्तू) जौंकेसत्तूदीपनहैंठंढेहैंहलकेहैंसरहैंकफपित्तकोहरैहैं रूखेहैंलेखनहैंपविनेसोशितावबलकरैंधूपकेत्यौंसेको पत्थ्यहैं मिसे जौ चनेकेसत्तूछीले चमे और जवों के सत्तूखांड़ और घृत मिलायके गर्मीको रफाकरते हैं गाढ़सत्तू भारीहैंपतलेहलकेहैंऔरदांतउखड़ेहुयेको सत्तूमनाहैं और रातको सत्तूमनाहैं और बहुत खाने और पानीमें तैरकेमनाहैं (लाजा) धानको भुनायके जो खीलकरै तिनको लाजा कहै हैं बहुत हलकी हैं ठंढीहैं बलकरैहैं कफ पित्तको पैदाकरैहैं छर्दि अती-सार दाह लोहू चरबी मांसप्यासज्वर इतनेंरोगोंको हरैहैं(धानी)धानी काबिज़हैंखुश्कहैकफकोचरबीको हरैभारीहै (चिड़वे) गीलेचावल भुनावेउनकोपृथक् कहैहैं भारीहैं बलकरैहैं कफकरैंबायुको हरैं (होला) मिसानाज आधाभूनाहुआउसकोहोलाकहैहैंचरबी कोकफकोपैदाकरैहै(ऊमी) कच्चेगेहूंकोभुनावै उस कोऊमी कहतेहैंकफपैदाकरै बलकरतीहै हलकी हैं पित्तकोअग्निकोजीतै(पक्कमांसगुण) हिंगुऔरतत्ते घृतमेंदेकेमांसकोभूनेफिरथोड़ागर्म पानीडालकेप-कावेफिरमिर्चऔरअद्रकवखुशबोमिलावैउसको प-रिशुष्ककहैहैं(तलितमांस) बहुतपानीडालेतो पलेह कहैहैं बिनारसजो सींकपैभूने सोपरिशुष्क कहावैहै

रोचनहैतर्पणहैभारीहैबलबुद्धिअग्निमांसओजवीर्य इनकोबढ़ावैहैऔरऐसेहीपीसाहुआ भारीहै पिष्टभ्र ष्टमांसउल्लिप्ततोभारीहैपत्थ्यहै परिशुष्कभीवैसाही हैअदिग्धबादीहै बलकरताहैं वीर्यको बढ़ावैहै रस- दारमें भी वहीगुणहै विशेषकरके हलकाहै दीपन है औरमांसकोकूटकेलोहेकी सींकमेंपिरोयके अंगारे पैभूने उसकोशूल्य कहतेहैं सोसब मांसोंसे उत्तम हलकापत्थ्य है (शूल्पकमांसगुण) अनारदानाकूट केमांसमेंमिलावै उसकेपुये पकावैउसको पक्कपिष्ट मांसकहतेहैं(पूपादि)बीचमेंभुनाहोयउसको घृताभि- भ्रष्टकहैंहैं लोनलगायके भूनेसेभी मधुरकीतुल्य है (तन्दुलपक्क)मांसकोतैलमेंभूनकेपकावैसोगर्महैभारी हैपित्तलहै (घृतपक्कमांस) घृतमेंपकाभीवैसाहीहै ह- लकाहैपित्तको नहींकरैगर्मनहींहैबलकरैहैहृद्यहैदृष्टि कोबढ़ावै(त्यक्तादिसिद्ध)गोरसचिकनाई औरधान्य औरखटाईप्याजऔर मसालामिलावेतो बलकरैहै रोचनहैदीपनहै भारीहै(बहुछिन्नमांस)रसका मांस रूखाहै बिनारसका बादीहै भारीहै (बेसवार मांस गुण) मांसमेंसेहाड़दूरकरै और त्रिकुटामिलाके प- कावेघीमिलावे उसको बेसवारकहतेहैं बलकरता है बायुको दूरकरताहैऔरभारीहै (अथ सौरवा) मूंग आदिमिलायकेपकावे सोबेसवारपरकहावे हल्दीसे-

धानोनहींगधनियांअनारदानामिलाकेबकरीकामां-
सपकावे उसकोसौरमकहैहैंमूगकेबेसन कासागुणइ-
समेंभीहैंऔरकूटेहुये मांसकाजोरसहोय उसकोसौ-
रावकहतेहैं (सौराव) बेसवारसेमिलाजोरसहोयतिस
कोकानिष्ककहतेहैंहृद्यहै श्रमश्वासबायुकफपित्त
क्षयीकोहरताहैफोडेवालेकोक्षीणकोजिसकावीर्यक्षी
णहोयजिसकेचोटलगीहोयउसकोगुण करै जिसका
गलापड़गयाहोयउसकोफायदाकरै॥ इतिमांसरस-
गुण॥(दाड़िमायुक्तमांसरस)अनारदानामिलाकेजो
मांसपकायाजायसोवहत्रिदोषको दूरकरताहैसौराव
ठंढाहैमुखकेसूखनेकोश्रमकोदूरकरताहै दीपनहैबायु
कोहरताहैसबधातुओंको बढ़ावैहैऔर खानेमेंभारी
हैपत्थ्यहैदीप्तहै अग्निवालेकोथोड़ामांस औरलोन
पानीमेंपकायाहोयउसकोदलियाबनिकाकहैहैंयेस-
बहलकेहैंऔरछांछमिलाके औटायाहोय उसकोक-
थितकहैहैंपाचनहैहृद्यहैरोचनहैबायुकफकोहरेकब्ज
करेपित्तबढ़ावे इतिक्वाढ़ी॥(कुथली) सांग और छांछ
मिलाकेऔटायाहोय सोदीपनहैरोचकहै बायु कफ
श्रमकोखोवैहै (पापड़गुण) पापड़रोचकहै हलकाहै
(खल)पिण्याक।तिलका।किट्टु।पतल। तिलपिष्टक
(गुण)खलकफकोपैदाकरैखुश्कहै काबिज़है नेत्रोंको
बुरीपतलचिकनीहैपुष्टहैकफ।पित्तकोपैदाकरभीराहै॥

इतिश्रीमदनपालविरचितेमदनविनोदेनिघण्ट
कृतान्नवर्गःएकादशः॥ ११॥

(हाथीनाम) हस्ती। मतंगज। दन्ती। मानकारी। सिन्धुर। कुंजर। पद्मवारण। द्विपद। द्विपदभा। दन्तावल। नाग कुंभीप। स्तंभरुण। गज। हस्तिनी। धेनुका। रेणुका। करिणीबसा (गुण) हस्ती कफकोवायुकोहरै गर्महै पित्तको लोहूकोकरै (घोड़ा) घोटक। सैन्धव। बाजी। तुरंग। हरि तुरंगम। हय। सप्तबाजीय। जूयबी। घोटका। बड़वावामी। प्रसुतिका। अश्व बाजिनी (गुण) घोड़ापचनेमें करुवाहै दीपनहै कफ पित्तकोकरै वायुको हरै है पुष्ट है बलकरै है और नेत्रोंको गुणकरता है मीठा है हलका है (खचर नाम) तज्ज। अश्वतर। शीघ्रग। वेगपूजित (गुण) बलकरैहै पुष्टहै कफ पित्तको पैदा करता है इतने गुणहैं (ऊंट नामगुण) उष्ट्रक। कमेलिका। बक्रग्रीव। शाखाशन। मय। बक्रकुत। करभ। दीर्घजंघ। धूम्र। मरुत्प (गुण) ऊंटकामांस हलकाहैमीठाहैनेत्रोंकोगुणकरताहैवायुको हरताहै गर्म्महै बवासीरको हरै चरबी पित्त कफ बढ़ावै (गधानाम) गर्द्दभ। रासभ। भारवाह। दुर्गम। खर (गुण) बलकरैहै कफ पित्तको पैदा करैहै पचनेमें करुवाहै हलकाहै और इसमें जङ्गलीगधाश्रेष्ठहै (अथभैंसानाम) मांहिष। सैरभ। शृङ्गी। बाहबैरी। घना-

घन। कामार। कमलद। शालकांघ। कालबाहन (गुण) मांसमीठाहैगर्महैचिकनावायुकोहरताहैनींदकोवीर्य को दुग्धको बढ़ावैहै छोटेमें बड़ा करता है औरअर्णा भैंसाभी। इसीके तुल्यहैं विशेषकरकेसुखावनेवालाहै (रीछनाम) रीछ अच्छ भल्लू। भल्लूक खड्ग। गण्डक गेंड़ा (गुण) चिकनाहै भारीहै पुष्टहै मीठाहै गर्मबायु कोहरे (अथसिंहनाम) सिंह। पंचानन। दृप्त। मृगेन्द्र। केसरी हरी। शार्दूल। पंचनख। मृगनाथ। सकृत प्रजा (गुण) शार्दूल और सिंह दोनों का मांस गर्महै नेत्रोंके रोगोंको खोताहै (भेड़िया) व्याघ्र। मृगारी। मृगहाब्यालि। भीष्मपराक्रम (चीतानाम) चित्रक। वेगवान्। चित्री। द्वापी। तीक्ष्णदंष्ट्रक (कुत्ता) कुक्कुर। श्वनुश्व। कौलेय। शुनकशुन। सारमेय। कृतज्ञ। भीषम। मृगदंशक (गुण) कूकुरकामांसव्याघ्रकाचीतेका कुरंगकावृकइनसबका मांसभारीहैवायु कोहरैहै नेत्रोंकोहितहै (शूकरनाम) शूकर। रोमस पोत्री। कोल। घ्रोणी। किरी। किरीदंष्ट्री। क्रोड। स्तब्धारोमा। तटीरी। ब्रहक (गुण) मीठाहै बलकरै है वायुको खोवैहै भारीहैचिकनाहैगर्महै पुष्टहै निद्राको दृढ़करै है (बकरीकेनाम) छागी। गलस्तनीमघा। सर्वभक्ष्या। अजा। अशुभा। कर्कर। छगल। छाग। बस्तोज। छेलक। पपु (गुण) भारी है चिकनीहै हलकी है

तीनों दोषोंको खोवैहै दाहनहीं करैहै पुष्टहैबहुतठंढी
नहींहै पीनसकोहरैहैदेहमें सबधातुओंकोसमकरती
है अभिष्यन्दी नहींहै (भेंड़नाम) छेली। मेष। मेढ़।
हुण्ड। मद्र। उरग्र। उरण। अविक। ऊर्णायू एडक
वृष्णिभेदक। पुच्छक। चंचुक (गुण) भारीहैचिकनीहै
बलकरैहै कफपित्तको पैदाकरैहै (दुम्बानाम) इसका
मांसपुष्टहै कफपित्तको करैहै भारीहै (हिरणनाम) ह-
रिण। ताम्रवर्ण। कुरंग। चारुलोचन। शाङ्र्ग। जितयोनि।
बातायु। चपलमृग। एणकृष्ण। परकृष्ण। कृष्णशारंग
(गुण) एणकामांसठंढाहै रोचनहै काबिज़हैत्रिदोषको
दूरकरैहै षटसहै बलकरैहैपथ्यहै हलकाहैहृद्यहैज्वर
को लोहूको दूरकरैहै (गोकर्णनाम) गोकर्ण। बिकट
शृंगी विहंगसम्बरा (गुण) गोकर्णसम्बर ठंढे हैं
भारीहैं चिकनेहैंकफपैदाकरतेहैं स्वादमीठाहैपचनेमें
मीठेहैं रक्तपित्तको खोवैहैं (अथरोझनाम) रूप्य। नी-
लांडक। नीलगवय। चारुदर्शन (गुण) मीठाहै पुष्टहै
चिकनाहैगर्महैकफपित्तकोकरैहै (अथकस्तूरियाना-
म) कस्तूरी। गन्धी। मुंडिनी। मृगमादिका (गुण) कस्तू-
रिया मीठाहै काबिज़हैदीपनहैहलकाहै औरमुंडिनी
ज्वर खांसीक्षयी दमेको हरैहै ठंढीहै (चीतलनाम)
कृतमाल। बर्गचर। वृषन। बिंदुचित्रक। छिकरी। बा-
तप्रमी। बातमृग। छिकार। कृष्णपुच्छक। गण। इन

का। मांसमीठाहैकाविज़हैदीपनहै हृद्यहैठंढ़ाहैहलका हैदमेकोज्वरकोत्रिदोषकोलोहूकोहरताहै (अथरुरु नाम)रुरु। शरन। मुक्तश्टंग। बहुविषानक (गुण) रुरुका। मांसभारीहै।मींठाहैपुष्टहैवायुपित्तकोखोवै हैहलकाहै बलकरैहै त्रिदोषको हरैहै (शशा नाम) शश। श्लूली। रोमकर्णी। लम्बवर्ण। बिलेशाय (गुण)हलकाहै ठंढ़ाहै मीठाहै काबिज़ है पाचन है अग्निदीपनहैसन्निपातकोज्वरकोदमेकोरक्तपित्तको कफको करैहै (अथशल्लकनाम) शल्लक। शल्लकी। श्वासविर्तू। सैंधा। श्चचिनीखरा (गुण) दमेकोखांसी को लोहूको शोषको त्रिदोष को हरैहै सैंधा भी वैसाहीहै (बिलाव नाम) बिडाल। आतु। मार्जार। वृषदंशक। आखुभुक्(न्यौलनाम)नकुल। पिंगल। बभ्रु सर्पारि। सर्पभक्षक(गुण) बिलाव मीठाहै चिकनाहै गर्महै कफको वायुको जीतैहै दुबलेपनको दमेकोखां सीकोहरैहै न्योलभी उसीकी तुल्यहै (वन्दर नाम) बानर। मर्कट। बनौका। कीश। बलीमुख। हरि। शाखा-मृग। प्लावी। प्लवंग। कपि (गुण) बायुको दमेको चर-बीको पाण्डुरोग को कृमिको खोवैहै (गीदड़नाम) शृगाल। जम्बुक। फेरु। गोमायु। फेरवा। शिव। शिवेश। वंचक। क्रोष्टा। लापाक। स्वल्प (गुण) बलकरै है पुष्टहै वायुको क्षयी को दूरकरता है (मुसानाम)

मूष्क। खनक। तेजावृंष। उंदुर। आमुक। (गुण) मूत्रको बिष्ठाकोबन्दंकरताहैबलकरैहैपुष्टहै बायुकोहरै है॥ इतिचौपायेनाम (अथपक्षीनाम) पक्षी। बिहंगम। पत्री। शकुंति। बिहंग। खग। अण्डयोनि। पत्ररथ। पतत्रि। शकुनि (तीतरनाम) तीतर। चित्रपक्ष। कृष्ण। गौरका। पिंजल। (गुण) रंग अच्छा करैहैहुचकी त्रिदोष दमा खांसी इनकोखोवैहैपथ्यहैतिसमें गोरा तीतर बहुतगुणदायीहै (अथ बटेर) बर्त्तार बर्त्तिक। चित्र (गुण) अग्निको पैदाकरैहैठंढीहैज्वरको त्रिदोषको दूरकरतीहै (अथ लवा) लाव। चित्र। चित्रतनु। इसके चारभेदहैं पांशुल। गौरिक। पौंड्रक। दुर्भर (गुण) हृद्यहै ठंढाहै चिकनाहै काबिज़हैदीपनहै पांशुल–कफपैदा करै है गर्महै बायुको हरै है गौरिक–कफबायुको दूरकरताहैखुश्क–अग्निको पैदाकरैऔर पौंड्रक–पित्तकोकरताहै कुछएकहलकाहैकफबायुको हरैहैदुर्भर–रक्तपित्तकोहरैहृदयकेरोगोंकोदूरकरैऔर ठंढाहै (गृहचिड़ा) चटक। कलविंक। ग्राम्य। पौंड्रक (गुण) ठण्ढाहैचिकनाहैमीठाहैवीर्यकोपैदाकरै कफको औरसन्निपातकोहरैहै। बगेड़ा–मीठाहैठंढाहैखुश्कहै कफपित्तकोदूरकरताहै (कबूतर) पारावत। कलरव। मञ्जुघोष। मदोत्कट। फाखता। कपोत। घुर्घुरकृत। पाण्डुर। अरुणाक्ष। कपोतक (गुण) कबूतरभारीहै

चिकनाहै रक्तपित्तको बायुको हरैहै काबिज़हैवीर्यको
करताहैठंढाहैऔरफ़ाखताभी इंसोंकीतुल्यहै कुछ
एकहलकाहै(मोरनाम) मयूर। चन्द्रक। केकी। मेघरव
भुजंगभुक्। शिखी। शिखावल बर्हि। शिखण्डी। नी-
लकण्ठ। शुक्लापांगी। कलापी। मेघनादमुदा (गुण)
पुष्ट है कानके शिरके रोगको बायुको शोकको जीतैहै
गमहैबलकोआयुकोबुद्धिकोअग्निकोबढ़ावैहैनेत्रोंको
गुणकरेरंगकोअच्छाकरैहेमंतमें शिशिरमेंइसकामां-
सबहुत गुणदायीहै ग्रीष्म बर्षा में बुरा है (मुर्गानाम)
कुक्कुट। विष्कर। सौंडी। कालज्ञ। चरणायुध। कृकवाकु
ताम्रचूड़ और एक बनकुक्कुट होयहै (गुण) पुष्टहै
चिकनाहै गर्महै बायुको जीतैहैभारीहैनेत्रोंकोहितहै
वीर्य कफको पैदाकरताहै औरबनकामुर्गाभीखुश्क
है कसैलाहै और पानी का मुर्गापुष्टचिकनाकफको
पैदा करता है भारीहै (तोतानाम) शुक। रक्तमुख।
कीर। बाडभी। सुन्दरदर्शन(मैना) सारो। सारिका
रसिका। दूती। सुमती। प्रियवादिनी (गुण) तोता
ठंढाहै हलकाहै कबिज़हैज़खममेंखांसीमेंक्षयीममु-
फ़ीदहै खुश्कहै मैनाभी वैसीहीहैचिकनीहै बुद्धिबल
अग्निकोबढ़ावै है (कोयलनाम) कोकिला। कलकण्ठ
पुरपुष्ट। बनप्रिय। पिक। परभृत। अहारी। ताम्राक्ष
मधुदूतक (गुण) दीपनहै काबिज़ है नेत्रोंको हितहै

क्षयीको खासीको जीततीहै(कागनाम)काक।ध्वांक्ष
गूढ़कामी।बलिपुष्ट।सकृत्प्रज।बायस।बलिभुक्।
काण।करट चतुर।द्विज (भासनाम) कांकमांस।
शिखाबाक्त।संतौगृकी।राधुरजप्रज (गुण) काक और
भासका मांसनेत्रोंकोहितहैदीपनहैहलकाहैऔरबल
बढ़ावैहैबलकरैहैज़खमकोत्रिदोषकोहरैहै(गिद्धनाम)
गृध्र।सुदृष्टि।शकुनी।बक्रबञ्चु।दूरदृक्(गुण)का-
कहीकी तुल्यहै बिशेषकरके नेत्रोंकेरोगोंको जीतता
है (हंसनाम).हंस।श्वेतगरुत।रक्तपदानन।राज-
हंस।कालाधार्त्त।राष्ट्र।मल्लिका कहावै है और मैना
कलहंस कहावै है पीला कादम्ब कहावै है कारण्ड
टुटवरट.(गुण) चिकना है भारी है पुष्ट है गर्म्म है
आवाज़को रंगको अच्छाकरैहैबायुको लोहूकोपित्त
को दूरकरताहै बलको अग्नि को पैदा करैहै (सारस
नाम)सारस।लक्ष्मण।रक्तमूर्द्धा।पुष्कराह्वय (चक्र-
वाकनाम)कंक।बक।बकोघ।कक।लोहपुच्छक(आ-
डिनाम) आटि।शर।रिरीति।बिचित्रा।जलधारिणी
(गुण)इनसबकामांस चिकनाठंढा है भारीहै मीठाहै
बिष्ठाकोमूत्रको पैदाकरताहै बायु पित्त लोहूको दूर
करताहै(ककरनाम) करेटुक।कर्करेटु।ककर।ककण
(गुण)पुष्टहै बलकरताहै बायुपित्तकोहरताहैहलकाहै
(ममोलाखञ्जरीट) खंजन।चौड़ीखा।किकीदिव।

पपीहा। चातक। घनाधार। शार्ङ्ग। स्तोक। कभ्रम भरद्वाज। कर्करीति। व्याघ्रठोही। कुटी (गुण) ममोला चिड़े की तुल्यहै कफबायु को दूरकरे है और पपीहा पित्तको बायुको दूरकरताहै भरद्वाजलोहू को कफकोदूरकरताहै (सिचान चींलनाम) शोन। शशादन। पत्री। चिरी। चिल्ली। चिरिल्लिका। (गुण) सिचान और चील्हका मांसदोषोंकोपैदाकरताहैभारीहै (उल्लूके नाम) उलूक। कौशिक। कावेरी घूक। निशाचर (गुण) इसका मांसभ्रांति करैहै बायुका कोपकरताहै (चकोर) चकोर। चन्द्रिकायोपी। जीवजीव। सुलोचन (गुण) पुष्टहैबलकरैहै चिकनाहैगर्महै बायुको हरैहै (क्रौंचवक) कुररटटीहरी (गुण) क्रौंचपित्तकोबायुको हरैहैपेचककफकोजीतैहैकुररक्रौंचकीतुल्यहै टिट्टिभथोड़ीबायुकोपैदाकरताहै। इतिपक्षीनाम (मत्स्यनाम) मत्स्य। झष। तिमीमारकंडी। वैसारिण। अण्डज। पृथुरोम। अभिसार। बिशार। शकुली। रक्तोदर। रक्तमुख। रोहित। मत्स्यपुंगव। सहस्रदंष्ट्र। पाठीन। कृष्णवर्ण। महाशिर। सफर। क्षुद्रमत्स्य। प्रोष्ठी। शफरी। जलमीन। चिलिचिम। तिमि। समुद्रज। (गुण) मत्स्यबलदायीहै पुष्टहैभारीहैकफपित्तकोपैदाकरैहै गर्महै अभिष्यन्दीहै चिकनीहै पुष्टहैबायुकोहरतीहै इति सामान्यगुणा। अथमछलीकेजुदे २ गुणकथ्यते॥

नदीकीमछली कुव्वतंकरतीहै भारीहैबायुको हरै है कुयेंकीमछलीकफकोअष्ठीलाको मूत्रको कुष्टकोक-ब्ज़कोकरतीहै तालाबकीभारीहैपुष्टहैंठंढीबलकरती हैमूत्रकोपैदाकरैहै झरनेकीमछलीकागुणतालाबकी केतुल्यहैबलकोउमरकोबढ़ावैहै दृष्टिकोकरैहैसर-कीमछलीमीठीहैचिकनीहैकुव्वतीहै बायुकोहरैहैसमु द्र कीमछलीभारीहैपित्तको बहुतनहींकरतीपवनको हरतीहै वहांकापानी जोखारीहैतातेकाबिज़हैदृष्टि-कोदूरकरैहैहेमन्तऋतुमें कुयेंकी मछली श्रेष्ठहै शि-शिरमेंसरकीश्रेष्ठहैशरद् ऋतुमेंझरनेकीश्रेष्ठंहै और बावड़ीतालाबकीश्रेष्ठहैवर्षामेंसारीमछलीदोषकर-तीहैंरोहूमछली सबमेश्रेष्टहै पित्तलनहींहैहलकीहै-औरपाठीनकसैलीहैकफपैदाकरैहै भारीहैछोटीझीं-गामछलीमीठीहैत्रिदोषकोहरतीहैऔरसूक्ष्म मछली पुरुषत्वकोबढ़ावैरुचिउपजावैहै खांसी बायु को हरै (मगरनाम)शिशुमार। तुल्यमकर।मकर।असिदंष्ट्र-का(गुण)भारीहैपुष्टहैकफकोकरैबायुकोहरैकुव्वतकरै मोटाकरताहैचिकनाहै(कछुवानाम)कच्छप।गूढ़पाद कूर्म्म।। कमठ। दृढ़पृष्ठक(गुण)कुव्वतकरैहै चिकना हैबायुको जीतैहैपुरुषत्वकोपैदाकरै है (मेढुकनाम) मंण्डूक। प्लवक।भेक।वर्षाभू।दर्दुरो।हारी(गुण)कफको करैपित्तकोबहुतनहींकरैहैकुव्वतकरैहै (केकड़ानाम)

कर्कटं।क्रुरुचिह्नकुलीर। पाण्डशान्हिक (गुण) मोटा करैहैपुष्टहै ठंढाहैलोहूके गलबेको हरताहै (सर्पभेद-नाम) भुजङ्गम। सर्प। भुजङ्ग। फणी। भोगी। कुंडली। कुंचली। चक्री। पन्नग। पंन्नगासन। गूढ़पाद।उदरग। नाग। जिह्मग। सरीसृप। चक्षुश्रवा। दीर्घपृष्ठ। व्याल। आशीविष। अहि। दर्ब्बीकर। बिषधर। दंदशूक। बि-लेशय। कुम्भीनक। प्रदारकु। दंष्ट्री। काकोदर। बिषा। डिंडिभ।राजिल। जगरवाहय। शिशु। जलसर्प। जल-गर्द। तिलित्स्थ। सर्पभेद(गुण) सर्पोंकामांसचिक्कनाहै नेत्रोंकोश्रेष्ठहै भारीहै दूषीविषकोकृमिकोहरैहै बुद्धि कोअग्निको बलकोबढ़ावेहै (गोहनाम) गोधा।खोर खटा। पंचनखी। राजनिभ। कृष्णसर्प। पोधेय।गौ-धेर।महाविषा (गुण) अग्निकोपैदाकरैहैबलकरताहै पुष्टहैपित्तको वायुकोहरैहैतुरतके मारेकामांसरोगी कोअमृतकीतुल्यहैदुबलेकोगुणकरैऔरबूढ़ेजानवर कामांसदोषलहै औरबच्चेकाबलदायीहैजिसकापेट गिरजाताहो उसकोमुफीदहै आपसेमरेकामांसबल कोहरैहैअतीसारकोदूरकरताहैऔरजहरखानेसेमरा होयवारोगसे मराउसकामांसत्रिदोषकोऔर रोगों कोबढ़ावेहै पक्षियोंमें नरकामांस श्रेष्ठहै चौपायोंमें मादेकामांसश्रेष्ठहै औरनरकामांस पिछलेआधेधड़ काश्रेष्ठहै औरमादेकेअगलेधड़काश्रेष्ठहैऔरवेपशु

औरपक्षीजोपानीसेदूररहतेहैं तिनकामांसअभिष्य-न्दीहैऔरजलमें जोजानवरचलते हैं औरजलसे पैदाहोयहैं औरभारीचीजेंखातेहैं तिनकामांसबहुत भारीहैऔरधानसेजोपैदाहोयहैंऔरवहीचरैंतिनका मांसहलकाहै जंघापेटशिरहाथपांवकमरपीठखाल मुंहदांतभारीहैंपहिलेसे दूसरासिवाय भारी है॥

इतिश्रीमदनपालविरचितेमदनविनोदेनिघण्टे मांसवर्ग्गःद्वादशः १२॥

बायुकेगलन्नेमें चिकनाऔरगरमपानीभलाहैऔर गरमखुश्कहैअच्छाहैऔरपित्तमेंठंढाऔरतरअच्छा हैमूर्च्छावालेकोठंढापानीअच्छाहैचावलमूंगका भो-जनवमांसकारसऔरउड़दकाभोजनऔरदहीऔर पयथोड़ीभूंखवालेको गुणकरताहै औरलंघनवाले कोस्त्रीकेसंगसे औरबायुसेतपाहोय तिसको दूध अमृतकीतुल्य है पानीऔटायाजो प्रातअरुणोदय समयपीवैतो बूढ़ानहोय सौ वर्षजीवैऔरभोजन करके दाहने पांवसे लेटै तो बल बढ़ैबायेंपांवसेलेटै तो आयुबढ़ैऔरभोजन करके दौड़ेतोमरजायरात्रि काजागनाखुश्कीकरै है दिनकासोनातरावटकरै है नींदकेसमयसोवै तोबलऔरउत्साह बढ़ै धातुसम होयक्षीणकोगुणकरैहैऔर जोरात्रिमेंजगाहोयतिस कोदिनकासोनाभलाहै भोजनकेपीछेसोवनाबायुको

दूरकरताहै कफकोपुष्टकरताहैकफकोचरबीको जहर खायेको रात्रिकाजागनाश्रेष्ठहै और दिनकासोना प्यासकोशूलकोहुचकीकोअजीर्णको अतीसारवाले कोगुणकरताहै (दातौनकरनी) दातौनकरनेसेमुख साफहोताहै अरुचिदुर्गंधमैलकफपित्तजाताहै मदिरापीनेसेजोदुःखीहोयदुबलेपनको जिसकेदांतलाल होंठकारोगहोयहुचकी छर्दिशिरदर्दमूर्च्छासूजनइतने रोगोंको दातौनकरनामनाहै(मुहँकापांवकाधोना) मुहँकाधोवनाठंढाहैरक्तपित्तकोजीतैमुहासेकोझाईको खोवैहै और व्यंगकोहरताहै पांवका धोना दृष्टि करताहैपुष्टहैश्रमकोहरताहैपांवकामलनाबहुतकुव्वत करैहैउत्साहकोबढ़ावैहै नींदकेसुखकोकरताहै मांदगीनेत्ररोगको हरैहै(चिकनाईकेकुरले)चिकनाईकेकुरलेसेमुँहकीखुश्कीदांतोंकारोगजाताहैगलेकेपकड़ने कोहोठोंकेफटनेकोरक्तवायुको दूरकरैहै गर्म्मपानीके कुरलेकरनेसे कफकाअरुचिकामलकानाशहोता है बिषकोमूर्च्छाकोनशेकोशोककोरक्तपित्त क्षीणमल खुश्कीइतनेरोगोंकोहरताहै (सुर्मांअंजन) सुर्मांआंजने सेआंखैंनिर्म्मलहोतीहैंऔरदृष्टिअच्छीहोयहैनेत्ररोग दूरहोतेहैं और रात्रिकेजागेकोछर्दिकोभोजन करे परज्वरमेंआंजनामनाहै(व्यायामकरना)व्यायाममेंकरनेकी सामर्थ्यहोतीहै और स्थिरतादोषोंको

क्षयऔरअग्निको करताहै औरसदाकरैतोबहुतगुण करताहैचिकनाभोजनकरनेवालोंको व्यायामसेदेही मजबूतहोतीहैरोगकभी नहींहोताऔररूद्धवाबिदग्ध जैसाभोजनखायतुरंतपचजांयऔर शिताबीबुढ़ापा औरपतितनहींहोवेबसंतमेंऔरजाड़ेमेंबहुतगुणकर-ताहैऔरशरीरमेंपसीनाहोयअथवाभोजनकियाहोय वामैथुनकियाहोयदमेमेंखांसीमेंक्षयीमेंदुबलापन में रक्तपित्तमेंजख्ममेंशोकवालेको व्यायामकरनामना हैऔरबहुतकरनामनाहैबहुतकरनेसेखांसीज्वरछर्दि कोकरैहैमर्दनकरनाश्रमकोव्यायामकोहरैनिद्राबल पुष्टाईकरै (हजामतगुण) हजामतऔरनखकतराना कल्याणशुचिरूपको करताहैऔरबालोंको अच्छा करताहै(अभ्यंगगुण) अभ्यंगबायुकेरोगोंकोखोवैहै धातोंको समकरैबलपुष्टाईकरैहैनिद्राकोरंगकोमुला-यमीकोकरताहैदुर्बलमनुष्यकोमोटाकरताहै(शिरमें तेलडालना)शिरमेंतेलडालनेसे बालअच्छाहोय है नेत्रोंकोपुष्टकरैहैऊंचेसुननेकोबहिरापनेकोहनुग्रहको दूरकरैहैधातुकोपुष्टकरैहै अरुचिकनाईसे अवगाहन करनाबायुकोदूरकरैहै ज्वरमेंजुल्लाबमेंअजीर्णमेंमना है(स्नानकरना)बायुलोहूकोदरिद्रकोखुजलीकोमैल कोहरैहैहृद्यहैकामकोकरैहैसबइन्द्रियोंको जगावे है गरमपानीशिरपरडालनामनाहैनेत्रोंकोबुराहै॥ कफ

बायुकेकोपकोऔषधगीलीखांय (अनुलेपन) अनुले-
पनसेप्यासमूर्च्छादुर्गंधश्रमदाहहोंयहै सौभाग्य को
रङ्गकोअच्छाकरताहैतेजहै (पुष्पधारण) फूल और
वस्त्रजवाहिरधारनेसेकान्तिबढ़ैहैपापऔरराक्षसदुष्ट
ग्रहकोदूरकरैहैकामको ओजको लक्ष्मीकोबढ़ावै है
(जूती पहरनी) नेत्रोंको गुण करतीहैआयु कोबढ़ावैहै
पांवके रोग हरै है पगड़ीबालों को गुण करती है (छत्र
धारण) छत्रधारणाओजकोबढ़ावैहैनेत्रोंकोगुणकरता
हैठंढाहैधूपकोजीतैहै (पङ्खा) ओजकोबढ़ावैहैमक्खी
दूरकरताहैपसीनेकोबायुकोशोषैहैमूर्च्छाको श्रमको
खोवैहै (यष्टिकाधारण) खुशीकोबढ़ावैहैविष्टंभीहैवीर्य
कोपैदाकरैराक्षसऔर सांपकेभयकोखोवैअरुचिको
दूरकरताहैजवानीकोस्थिररक्खैहैआयुबलबुद्धिअग्नि
को बढ़ावैहै सब इन्द्रियनको चैतन्य करैहै (सेजका
सोवना) सेजका सोना नींदको पुष्टाईको बलको देहै
तापनामूर्च्छाको पसीनेकोप्यासकोलोहूकोदाहको
श्रमकोकरैहैपित्तकोरंगकोबुराकरैहैअग्निकोशीतको
बायुकोकरताहै (चांदनीकेगुण) ठंढक आनन्दपैदाक
रतीहैपित्तदाहकोजीतैहैअँधेरामोहऔरकफकोपैदा
करतीहैवर्षाकुन्नतकरैहैठंढीहै नींदकोअभिष्यंदको
और आलस्यकोपैदाकरैहै बायुखुश्कीको विवर्णको
स्तंभको पैदाकरैहैदाहको पित्तकोहरैहै पसीनेकोमू

च्छों कोऔरप्यासकोदूरकरताहै (प्राणदाताछःबंस्तु ओंका बर्णन) ताज़ामांसानयानाजछोटी स्त्री। दुग्ध पीवनाघीखानागरमपानीसेनहाना। येछवों बस्तु प्राणको देवैं (प्राणहर्त्ता छःबंस्तुओं का बर्णन) सड़ा मांसबूढ़ी स्त्री। बालार्कदही। प्रभात का मैथुन और भूखासोनायेछःबस्तु शिताब प्राणको हरतीहैं(छःब- स्तुओंकेअठगुनेगुण)अन्नसे अठगुनाबलपिसानमेंहै पिसानसे अठगुनादुग्धमेंहै दुग्धसेअठगुनामांसमेंहै मांससे अठगुनाघीमेंहैघीसेअठगुनातेलमलनेमेंहै॥ लङ्घनकफकोचरबीकोआमकोज्वरकोहरैहैहलकाहै पाचनहैदीपनहैवायुकोपैदाकरताहैशूलकोअतीसार कोजीतैहैपरन्तुबालककोगर्भिणीस्त्रीकोदुर्बलेमनुष्य कोशोकमें काममें भयमेंक्रोधमें राहसेथकेकोपुराने ज्वरवालेकोइतनोंकोमनेहै(पूर्वीयबायुके गुण)पूर्वकी बायुभारीहैमीठीहैचिक्कनीहै पित्तकोलोहूकोबढ़ावेहै रोगपैदाकरतीहै विषकोकुष्ठको ज़ख्मकोफोड़ेवाले को बुरीहैत्रिदाहीहैशीतकोकफको शोकवालेकोगुण करतीहै(दक्षिणीयबायुकेगुण)दक्षिणीय बायुमीठीहै रक्तपित्तकोहरैहैहलकीहैबिदाहीनहींहैबलकरतीहैने त्रोंकोहितहै बायुनहींकरती(उत्तरकीबायुकेगुण)मी- ठीहै तरहैदोषोंकेकोपकोकरतीहै बलकरैहैनरमहैज़- ख्मवालेको क्षीणको कफवालेको इनसबबीमारोंको

बहुत फ़ायदा करतीहै (पश्चिमकीबायु)खुश्कहै तेज़
है तरहै बलको दूरकरै निर्मलहै शोषणहै कफको च-
रबीको हरती है और हलकीहै (मिठाईके गुणदोष)
ठंढीहै धातुको दूधको बढ़ावे है कुव्वत करती है नेत्रों
को गुण करतीहैबायुको पित्तकोहरतीहै मोटाकरती
है कफको कृमिकोखोतीहै औरजोकोई इसको बहुत
खायतोज्वरदमागलगण्ड उपजातीहै(खटाईकेगुण
दोष) पाचनहै रुचि करतीहैपित्तकफकोपैदाकरती है
हलकीहैलेखनहैगरमहैशीतको जी मि चलानेकोबायु
को हरतीहै बहुतखायतो रक्तपित्त दाहकरतीहै (लोन
गुण) लोन शोधनहै रुचिकरै है पाचनहै कफ पित्तको
पैदाकताहैपुरुषत्वकोबायुकोहरताहैशिथिलता नर-
मीकरताहैबहुतखायतो आंखमेंदोष और लोहूपित्त
और कफकोकरैकोठेकेअन्दरज़ख्मकरताहै इतनेगुण
नमकमेंहैं(करुयेके गुणदोष कहतेहैं) करुआ पित्तल
है कफकृमि खुजलीको बिषको हरताहै बहुतखायतो
भ्रम लबोंकी खुश्की और दाह करैहै(तेजकेगुण)तेज
ठंढाहै प्यासमूर्च्छाज्वरपित्तको कफकोजीतैहैबादीहै
अग्निकरताहै दुग्धबढ़ावैहै शोधनहै शोषणहै हलका
है बहुत खाय तो कृमिको शिरदर्द को मन्यास्तम्भ
भ्रमको करताहै कसैलाहै रोषणहै काबिज़है शोषण
है वादीहै बहुत खाय तो अफरा हृदयकी शूल को

करताहैं (नासलेनेकेगुण) नासलेनादृष्टिकोअच्छाहै दांत मज़बूत करैहैं मुखसाफ करतीहै पलीनको दूर करतीहैकंठकेमुहकेमैलको हरैहैजोइसकों नित्यसेवै तोगुणकरतीहैऔरंधमुनसेनिद्रातन्द्रामुखकीदुर्गंधि दूरहोतीहैविषको हरैहै (जुल्लाबके गुण) जुल्लाब से बुद्धि निर्म्मलहोतीहैइन्द्रियांप्रबलहोतीहैंधातुस्थिर होतीहैंअग्निदीपनहोयहै अयुर्बल बढ़ैहै औरवस्तिकर्म्मंवायुपित्त कफलोहूकेकोपकोगुणकरताहैसन्निपातमें अच्छाहै लोहूको बढ़ानेकोचमड़ेको गांठको सूजनको लोहूके रोगको मुफ़ीदहै दीपनहै पाचन है और क्लेदकोहरताहैजाड़ेमेंउसघरमेंरहियेजोबाससे रहितहो (वर्षाऋतुके सेवनकी बस्तु) वर्षामें मीठा कसैलातेजरससेवनेयोग्यहै औरवर्षामेंजंगलीजानवरोंका मांसऔर दाख औरखांड़ गुड़चावलमधुगेहूं मूंग निर्मल जलअतिगुणदायकहैंऔरविरेचनविधिसेकरैतोपित्तदूरहोयऔररातकोजागनाऔरछायामबहुत धूपदहीक्षीरखटाईगरमाईविदाहीतेजकरुवी वस्तुदिनकासोनामनाहै(हेमन्तकेसेवनकीवस्तु) हेमन्तमेंसलोनाखट्टातेजकरुवा खारी घीतेलगरमाई तेजअन्न खानेकेयोग्यहैं (शिशिरमें) तेलका अवगाहन अग्निसे तपेघरमें रहनायोग्यहै (वसन्तमें) तेजहैखारी कसैला करुवामद्यसहित मंगजंगलीमांस

अवगुणकरैहैं(हेमन्तमें)कफगलेवाकरैहैताततेजचीजमगजकेशोधनेवालीऔरजुल्लाबवमनकुरलेकरे तोफायदा है (ग्रीष्ममें) ठंढेघरमें तालाबमें नदीमें रहनाचाहिये ठंढेभोजनखानातालाबोंकी ठंढीबायु कासेवनादिनकासोवनाहलकावस्त्रबारीकपहरनाठंढीमीठीवस्तुघीकासेवनाठंढादूधखांड़मिलाकेपीना शरीरमेंचन्दनआदिलगानाइतनेसेवनयोग्यहैं व्यायाम मैथुन मद्य गरमचीज़ इतनेत्यागने योग्यहैं॥

इति श्रीमदनपालविरचितेमदनविनोदेनिघण्टे मिश्रकवर्गस्त्रयोदशः १३॥

(अथत्रिफला) हड़ाबहेड़ा आंवला(त्रिकुटा)अतीस सोंठामोथा।गिलोय(चातुर्भद्रक)पीपलापीपलामूल। चाव।चीता। सोंठ ये चातुर्भद्रकहैं (पंचकोल)बड़की गूलरकी।पीपलकी।पुलक्षकी।वेतसकी।इनपांचोंकी छालकानामहैमिलीहुईका(पंचवल्कल)शालिपर्णी।पृष्ठपर्णी। कटाई। भटकटैया। गोखुरू (पंचमूल) बेल। अग्निमन्थ।स्योनाक।काश्मरी।पाटला(वृहत्पंचमूल)विदारी। सारिवा। मेढ़ासींगी। वत्सादनी।हलदी इनदोनों पंचमूल को मिलादेने से दशमूलकहावै है तीसरापंचमूल) जीवक। ऋषभक। काकोली। क्षीरकाकोली। शूपपर्णी। जीवनी। मधुक। सोंठ। मिरच। (पीपल। धनियांदाड़िम।पीपलामूल(वेसवारनाम)

कूट। छड़। हलदी। मुरा। शैलेय। कचूर। बच। मोथा इसको सर्बौषध गसकहतेहैं सर्बौषधमें सूखेआंवलेकी छाल मिलावैतोसुगन्धामलककहतेहैं औरकंकोल। सुपारी। लौंग। जायफल। कर्पूर। पंचसुगंधककहावैहैं औरतीन भागकेसरऔरइतनेंही चम्पकेफूल। अगर। कपूर औरकस्तूरीचन्दनइनकोमहासुगन्धकहतेहैं (षट्रस काभेद) करुवा। तेज। कसैला। सलोना। खट्टा। मीठा। संतर्पणकहातेहैंऔरदूसरादाख। अनारदाना। छुहारा। इनकाचूर्णसहतघीमेंमिलावैतोयहभी संतर्पणकहावैहै। औरसत्तू घीमेंमकरोयके ठंढेपानीमें सानैबहुत पतलेनहोयँबहुतगाढ़ेभीनहोयँतोइसको शास्त्रमेंमंथ कहतेहैं (पंचगव्य) गोमूत्र। गोबर। दूध। दही। घृत। ये पांचोबराबरहोयँतो पंचगव्यकहावैहैं और गऊ भैंस बकरीगधाघोड़ा इनकेमूत्र। पंचमूत्रकहावैहै (पंचनिम्ब) नीमकेपातफूलछालजड़फलपंचनिम्बकहावैहैं। सिरसकापंचांगपंचशीर्षक कहावैहै औरछाल, पात। जड़। फूलफलऔरगधा। ऊंटहाथीइनकामूत्रमूत्राष्टकक‑ हावैहै (षणुहाष्ट) षणुहा। ऊंगा। हलनी। धव। आक तिल‑ पुष्पी कुड़। यह षणुहाष्टक कहावे हैं (क्षारत्रयनाम) सज्जी। यवाखार। सुहागा। यह क्षारत्रयकहावैहैं (पंच लवण) सेंधा। सांभर। सामुद्रलोन। बिड़लोन। सोंचर लोन यह पांच लोन कहावैहैं (उपविषनाम) आकका

दूध।थूहरकादूध।कलिहारी। करवीर। धतूरा ये पांचो उपविषहैं(चत्वारपंचकं)पुनर्नवा। शूर्पपर्णी।बला। अरण्डं। जीवक। ऋषभक। वीरा। जीवंती। सतापरशरे। क्षुद्रभंशालीकीजड़।गुहा।सहा। अश्वदंष्ट्रा। सैरीय। कासमर्दकं। यहचत्वारपंचककंहावेहैं(दूसरात्रिफला) दाख। काश्मर्य छुहारा (त्रिफलातीसरा) जायफल। सुपारी।लवङ्ग।इतिमिश्रकवर्ग्गःसमाप्तः (अथएकार्थ) सौमांजन।त्रिपुस।शतकुसुमा। शतपुष्पा।दंडहस्ती। तगर। भंडारी। मजीठ। सर्वरस। सर्गरस। बहुप्लवा। सल्लकी। कुंभोल्ल। कङ्ग। गुग्गुलु। प्रावृषायनी। कपि। कच्छु। अग्निज्वाला।धातुकीकुकुर। स्थोणेयं।कोटी। वर्षास्पृक्का। अवदात। उशीर। चन्द्रक। कपित्त।बारसा। बोल। वृहत्त्वक। सप्तपर्णी। मधुधातु। माहिका पोर।मुस्तं।ब्रह्मकुप्पु।अजमोद।आत्मशल्या। शतावर।अहिपर्णी।पँवाली।अम्लिका।उष्ट्रलोमस। विषाणिका। हट्टीविलासनी।नखः।अंजनकेशी। नीलिका। इक्षुपत्रा बवशार्दूली।कण्टकारिका। हिंगुला। बृहतीस्थल। शृंगाटकी।गोखुरू।मण्डूकपत्री। स्योनाक गोकर्णी। मूर्वा। तीतनिका। मधुषष्टिका।महातीतनिका।शाल्वपर्णी। कुमुदिका। कंदफल। महाकुमुदकाश्मरी। श्वधावृक्षा। विकंकन। तापस। इक्षइंगुदंचर्म्मवृक्षीसौख्य।क्षीरपुष्पी।शङ्खपुष्पी।अर्कपुष्पी। पद्मसा

मधुकपुष्पी। पुत्रजीवक। कन्दरालय। प्लक्षसफरी।
अश्मंतक। कुलिश। कुसुम। तिलकुसुम। बनत्रिपुंसी
त्रिभटा। र्कक्षिर। स्तंडुलीयक। चित्रपर्णी। पृश्ठिपर्णी। क्षुद्र
मिजनक। क्षवक। अजशृंगी। कर्कटश्रृंगी। स्यन्दनो। ति
मुक्तकराला। पर्णी। रास्ना आसमपर्णी। शी। लंबासुक।
तिलपर्णी। चन्दन। काकमुद्रा। मुहुर्पन। पांण्डुरोमस-
पर्णी। माषपर्णी। बरटा। करपासी। तरवीरण। वीरसे-
वल। सेवल सेवाल। दण्डेरक पंटेरक संनो। हटी। मुद्ग-
पर्णी। वरी। शतावरी। पतूरी। रेणुका। नालिका। शाक
नालिका। कुचैला। कुचेरी। बलबंधा। सारिवा। मारिखे-
गन्धारी। यवासक। लवासक। क्षीरपत्र। वस्तूक।
शालंक्या। पालंक्या। कुठेरक। कुठिंजर। धान्यवा।
सन्यवा। संबा। संस्तवा। लोध्रक। गुग्गुल। मत्स्य
काली। उपोदिका। श्रृंगबेरिका। गोजिहा। कांतकामक
भद्र। मुस्तमुंजावक। तालमुस्तक। कंकालाशिविः। उ-
द्दालक। क्षुद्रासिम्बि निष्पाव। राजसिम्बि। आढकी।
तुंबरी। कलिन्दक। कर्कालुक। एर्वारु। कर्कटी। रोमक।
कूष्माण्डक। ग्रमस्नेही। अंकोलः। सिध्यालुक। कर-
तालुक। कुर्कुटी। क्षत्राक। काकाण्डा। पंचांगुलपत्रक
यावक। कुलमाष। ध्यांडक। एरण्ड। बासव। कृष्णा
मुद्गः। शारद। पतिमुद्ग। हरिमंथ। श्रणकम। कुष्ठ।
कामकुष्ठ। हरेणु सतीनउमा। अलसी। नन्दीमुखा।

कपाली॥कोरषः कोद्रव॥शितशूककोयवाः। यवकः॥शालीविशेषः॥यवनो गोधूम॥अक्षयधान्य॥इषीका॥ शरतूली॥कर्तृण॥सुगन्धतृण। भूतकोप। वाणी। कोझ्यं-विष्णुक्रान्ता॥अपराजिता॥नारायणी॥शतावरी। राकाष्टी॥लांयकः॥कुमारजीवक। पत्रजीवका। पललः। तिलकल्कः॥बल्लूरं॥ शुकमांस। नागबल्ली। ताम्बूल पल्लोरक्त। मूलीखदारका॥मातुलो। धतूरिका। मातुलपुत्र॥धतूरफल॥ मातुलानी। भंग॥कुजलः। करंजः आदिपर्णी सुवर्चल। पाटलि। पाटल॥ एकैचिका। त्रिवृत॥मारुजा॥ धावा। पृथुका। भ्रष्टतन्दुला इत्येकार्थः॥(अर्थान् व्याख्यास्यामः)मधुमधुःमाध्वीकं पुष्परसंचयःक्षीरमुतकंच॥ पियपाकस्तिलकल्कलः। तुरुष्कश्चशिग्रुः सौभांजनं हरितशाकश्च प्रियंगु गन्ध द्रव्यंकंगुश्च॥ धान्याकंधान्यकीब्राह्मदीश्चधनासुस्त मभ्रकश्चशीरीलांगुली दर्भविशेषश्चशताह्वीशतपुष्पा॥शतावरीच॥उदुम्बर॥ क्षीरवृक्षस्ताम्रंचाविश्वाशुंठी॥प्रतिविषाच जयांतकारीहरा॥हरीतकीच॥राजादनक्षीरकी प्रियालश्चलंबुब॥लुकासकंच॥दुरालभा॥धन्वयास॥कण्टकारि॥करिकाचकिंजल्का॥नागकेशरः। पद्मकेशरश्च॥कुण्डली॥गुडूची॥कोविदारश्च। क्रमुकापट्टिकालोध्र॥पुंगफल॥ चतवर्गःपुन्नागःपत्रकेशरश्च ॥सिंही॥वृहतीब॥सकश्चपिच्छिलशाल्मली शिंशिपाच

अरिष्टा।कटुकी।नागकंणश्च।अमृणीललामज्जकं। उ-
शीरंचकारीवी।अंजगन्धा। हिंगुपत्रिकाच स्वादुकट
कोगोक्षुरकोविकंकतश्चतिंतिड़ीकंवृक्षाम्लंमम्लीक
फलश्च दहनश्चित्रंको भल्लातकश्च।अंगारबल्लीमा
र्गीकण्टकरंजश्चगिलोयपझबीजत्रेणुफलश्च देवामू
र्वास्पृकाचदीपकोजमान्यजमोदा।च सेवाला मज्जके
मुशीरं चकोरवीअजमोद।शतपुष्पाचआसफोतासा
रिवागिरिकर्णिकाचब्राह्मणस्पृका।मार्गीचमधूलिका
जलमधुकनीलिका।चकुलत्थिका।त्रिवृत्चक्षुष्या। ताल
पत्री।मुशली।मिश्रेया।विकेङ्कर्य।कटपाली। मदनफल
किणिही गिरिकार्णिका।अपामार्गश्च। अंश्वावरेहोअश्व
गन्धा।च।कटुम्भरः।कट्वांगः।कटुणक्या।मूलंचावर्म।कंसा
मांसारोहिणीसातच। बंजुलाबेतसोवंचुलोवेतसो।वंचुषण
शुकंकपिपार्णिशिरोषश्च। अगुरु। शाल्मली सारेगुरु-
श्च। बालपत्रोयवासःखदिरश्च तथा नीलिनी सूक्ष्मै
कबउग्रगंधाबचायनीव सारदासारिवाजलपिप्पली
कणापिप्पली।अजाजीच। ऐंद्री। इन्द्रवारुणीच। बीरु
क्षीरकाकोली। गुडूचिकाच।कृमिहाहरिद्रा।विड़ंगाच
गौलोमी।बचा। दूर्वाच। गंधफली। प्रियंगुचम्पक का-
ककाचसौम्या।मानसायनीजातिपात्रिकाजातिफलं-
चकठिल्लकः। पुनर्नवा। कारबेलश्च। वृक्षधूपः।शिरासी
श्रीवासंश्च। वितुन्नकं। धान्यकं।तुत्थकंच। अंशोरसा-

न्ना शिलाजितुश्च। सर्पगंधपलासः कर्चूरश्चवारुणी।
इन्द्रवारुणी सुराचकुरातकः कुरंटकः सहचरश्चगौरी
हरिद्रा गौरोचनाच। गौरःकरंजःसर्षपश्च। मधुरा कं-
कोली जीवनंच। मधुरकंजीविष जीवकश्च। चोचत्व
कालेवचंच। निर्गुंडी सेफालिका नीलसिंदुवारश्च।
पटगलकशोनलश्च करंजकरंगीनखश्चा। काकमाची
काकजंघा काशिकश्च। दीर्घमूला। शालपर्णी। य-
वासश्चबको जंबीर मदनकश्च व्याधो जलवेतसः।
कर्णिकारश्च। प्रजाशृंगी। कर्कटशृंगी। बिषाणिका-
चत्रिपुटा त्रिवृत्सूक्ष्मैलाच प्रत्यक्श्रेणी। दन्ती।
द्रवंतीच। अपराजिता शीतला कागिरिकर्णिकाच।
त्रिपुरावतपदीकाकजंघा। ज्योतिष्मतीच। कूलकप-
टोला काकतिंदुकश्च। धामार्गअपामार्गकोशातकीच
प्रचोदनी। कण्टकारिकादुरालभाच। कटंभरा। शता-
वरी। दूर्वाच। तुंडिकेरीमुंडिकार्यासाच। तगरं। शामकश्च
उदराह्वावला। पृष्ठपर्णीच। शकुलादनीकटुकागजपि-
प्पलीचकंटनटः परिवेलवकटुंगश्चभंडारिकामांजि-
ष्ठातंदुलीयक दधिश्रीवास क्षीरविकारश्च। क्षारो
यवयवक्षारस्वर्जिकाक्षारश्च। तेजनीतिजयंतीमूर्वाच।
ततःशरोबालोवेणुश्चरसश्च। हस्तिपर्णित्रिपुरा। एरंडः
श्च। शताबर्या। शतावरी दूर्वाच। दन्तशठो जम्बीरी
कपित्थश्चदन्तशठा। वांगेरि अम्लिकांचलोनिकाचां-

गेरीलोणिकाशाकश्चाम्लिका चांगेरीलोणिकाशाक
श्चाम्लीका चांगेरीतिंतलीफलंचकुवलयनीलोत्पलंब
दरंच।नीपकदम्बोमधुकर्कटीच।मधूलकंजलमधुकम
संजात मद्यांश्च। बेलासिंबिःपुष्पविशेषश्च पुष्पंफलं
कूष्मांडंकपित्थश्च।पौष्करमूलं पत्थ्यश्चभृंगोभ्रमरो
भृंगराजश्च। चिंचाविशालाद्रवन्तीच। उपाचित्रादंती
पृष्ठपर्णीच। शीर्षपर्णाग्निमन्थःपद्मकश्च। नन्दीवृक्षा
स्तूणिकाश्मरीच॥ इतिद्व्यर्थानि॥ अर्थान्व्याख्या-
स्यामः॥सौवीरमंजनंकांजिकंवदरंच्चअरिष्टोनिंबोर
सोन आसनंश्च। श्रीपर्णिका।कटुफलंकाश्मरीअग्नि
मन्थश्चमहौषधंविषंशुंठीसौनश्च दुःस्पर्शाकंटकारि-
कादुरालभाकापिकच्छुश्च।श्यामा तृवृतप्रियंगुपिप्प
लीच कृष्णपिप्पली।उपकुवंचि।नीलकीच।अम्बष्टापा
ढ़ामाचिकाचांगेरीच।मदनःपिण्डीतकःसित्थकोधत्तू-
रश्चअमृता।गुडूचीआमला हरीतकीच।पिंडाहरिद्राखः
र्जुरीहिंगुपत्रिकाच।सोमवल्ली।बाकुची ब्राह्मीच।शुकब
र्हिस्थौणेयकं तालीसपचं।कालमेषीमंजिष्ठातृवृत्तोप
कुञ्चिका।कालानुसार्य्याःतगरंकालीयकंशैलेयंचपला-
शःकिंशुकःशयेशतपत्रश्च।मोचाकदलीशाल्मलीसौ
भांजनश्च। वृश्चिका हिंगुपत्रीकोपकुचिका सूक्ष्मैला-
च। लताप्रियंगुसारिवा ज्योतिष्मतीच। सुरभिःशल्ल-
की।मुराएलवालुकश्च। स्नाकः।प्राबासो बिल्लोलवंग-

श्च। शिलाह्वयंशिलाजीतुशैलेयकंमनः शिलाचचा
म्पेयकःपद्मकेसरःनागकेसरश्च। मयूरकोअपामार्गो
जमोदातुत्थकश्च। पाक्यंबिड़ंगलवणंयवक्षारःकां-
चनश्चमधुपर्णीगुडूचीकाश्मनालिकाच।कुलठीमनः
शिलाधान्यंनलिकांचक्षारोयवक्षार। खर्जिकाक्षारज
लश्चवर्त्ताकाश्वरेखुपरिपेलवःपक्षिविशेषश्च। लक्ष्मी
समीपविलासिनीऋषभश्चसुखी उपकुञ्चिकाकारव-
ल्लीब्यंगालिकासुखवीरकाच।वारिजशंखपद्मलवंगश्च
मर्कटीआमगुप्तापामार्गोबल्लीकरञ्जकपीतन।आम्रा
तकःप्लुक्षःशिरीषश्च।सोमवल्कःकटफलश्वेतखादिरः
करंजश्च। सहस्रवेधिहिंगुअम्लवेतसः कस्तूरीचिका
श्मरीपुष्करमूलंकुंकुमं काश्मरीच वञ्जुलोवेतसः
स्यन्दनोथाकश्चाप्रियाकोशनः प्रियंगुःकदम्बश्च
पारिभद्रकोनिंबःपारिजातोदेवदारुश्च।जीवन्तीवृक्ष
रुहाशाकविशेषश्चहिमपुष्पीसीबांडुःस्पर्शपीतपूथि
कीचपद्माफ्मचारिणी।मार्गीपद्मबालकाच। समुद्रान्ता
कार्प्पासीकपासकस्पृक्काच चुक्रीकामिलका चांगेरी
सिंडाकीपबुक्कोअनन्तायवासोलांगलीदूर्वाच।कृ-
ष्णवृत्तिकापाटलाकाश्मरीमाखपर्णीच। नादेयाज-
लजम्बुजलवेतसतक्कारीचगोमेदकः।पत्रकमल्लारीर-
त्नविशेषश्च । सौगन्धिकंनालंपद्मकतृणंगन्धपाषा-
णंनसुवस्तरारास्नासेफालिकागन्धनाकुली चापलक-

सालाक्षागुग्गुलगोक्षुरंश्चहे मवती हिमावंती श्वेतवत्रह रीतकीच। अत्रायह रीतकी महाश्रावणी पद्मचारिणीच। तास्रपुष्पीधातकी तृत्रृत्पाटलाच। शतपर्वा। दूरिपौब- चीच। रोचनातृत्रृत्कपिल्लगोरोंचनाच। बिशल्यालां गलीदन्तीगुडूचीरक्तसारःपन्नगःखदिरो। रक्तचन्दन श्च। श्रृंगीप्रतिबिष्ठाकर्कटश्रृंगीऋषभकश्च। कच्छुण्या सोदुरालभाकपिकच्छूचमण्डूकपर्णी ब्राह्मीचजिष्टार लूकश्च। कालस्कंधःश्यामखदिरस्तिन्दुकतमाल- श्च। लांगलीऋषभकःस्वयंगुप्तः। पृष्ठपर्णी। समंगाव ला। मञ्जिष्ठाखदिरकाच। अक्षगेन्द्रकासौभांजना समुद्रलवणञ्च। क्षुरकातिलकःकोकिलाक्षोगोक्षुरकश्च अञ्जनंकृष्णांजनंपुष्पांजनंरसांजनञ्च। मधुरसाद्राक्षा मूर्वाकाश्मरीच। स्वादुरसामृद्वीकाशतावरीकोकालाच वसुकोराजकोवुकपांशुलवणञ्च। शिरोपामार्गसमुद्रल वणंहस्तिपिप्पलीच। कुंडलीगुडूचिकांचनीयश्चायश्चएव घश्चमहाधुद्रपर्णी। महाबलामदतरणीच। पत्थ्याहरी तकीकर्कोटाजीवंतीच। चपलापिप्पलीतन्लीद्वयकः। कपि कच्छूश्चकायस्थाकाकोलीगुडूचीआमलकञ्च। सदापुष्पीअर्कपुटोविलश्चवीराक्षीरकाकोलीअर्जुनोद भेविशेषश्चवीरतरुककुभउशीरंशरंशरश्च। मृड़ालाप नालंउसीरिका। प्रियंगुः। शिरीषकंचपूतिदारुःदेवदारुः चंडपूतिकश्च। मरटवल्लीअपामार्गो। हस्तिपिप्पलीस्वयं

गुप्ताक्षीरणीदारिकाक्षीरकाकोलीकांचनक्षीरच। ऋष्य-
प्रोक्तातिबला शतावरी स्वयंगुप्ताच। अश्वगंधावृद्ध
दारुकपिंडालुका कोबिदारिकाच। वृक्षगन्धा। मूल-
रक्ताकुलंक्षीरविदारीं चइक्षुगन्धाविदारी कोला-
क्षकः काशकृश्चशुक्लाविदारी काकोली श्वेतस्यन्दा-
च। क्षीरशुक्ला क्षीरविदारी क्षीरकाकोली नील-
स्यन्दाच।श्वेताश्वेतस्यन्दाशर्करा।विदारीच। महाश्वेता
नीलस्यन्दायाशर्करा क्षीरबिदारक्षवकश्चताम्रमूलमं
जिष्ठाद्दुरालभानमस्कारीच।इन्द्रवृक्षःकटुजोर्जुनोदेव
दारुश्च।लोहमगुरुकांस्यमयश्च। हेमनागकेसरंपंचक
सुवर्णंच।बाणःसहचरः शरोबासबिशेषश्च।कालिकातृ
वृदुपकंचुका। नीलिकाच। कालमेषामंजिष्ठाःतृवृदुप
कुंचिकाच।श्रीपर्णिकाश्मरीअग्निमन्थकंदफलश्च।कृ
त्रिमंरसांजनंविड़ंतुरुष्कश्च(इतिअर्थान्) (अथनाना
र्थान्वक्ष्यामः)मृगोभ्रमरधूम्याविचित्रिभंगराजेषुचत्व-
विभृंगारकेलवंगेहेमहेमकुम्भेचमार्कवेमदनःसित्थके
रीठधत्तूरेतगरस्मृतौहेमवत्योमताःस्वर्णक्षीरीपथ्या
मयाःतिलकंक्रुरोघ्रेचतिलकद्रुमेविशेषकेतिलेख्यातं
तिलकस्तिलकालकेकाकाह्वाकाकमांचीचकाकोलिका
कणतिकाकाकादनीतुकाकेशोलिकाकोबायसीमसो
काकोदुम्बरिकागुंजासप्तकाकाह्वयामताःसर्थौद्भिदने
षेषुसीहकेनागकेसरीनागदन्त्यान्नागवल्यांनागशब्दो

विनिर्द्दिशेत् । अक्षशब्दोस्मृतोष्टासयंचिकेचविभीत
के॥ कार्षेपद्माक्षहृद्दाक्षशकटेह्वियसके। मांसद्रवेचे
क्षुरसे पारदेमधुरादिषु ॥ वाले रोगेनिशनीरे रसो
नवसुवर्त्तते।गगनंसाक्षिकंचैवविमलंरसकंतथा।कदं-
बंकदरंवज्रंवैक्रांतंशश्यकंतथा॥ चपलंतहारसासत्वे-
निर्दिष्टेधातुवादिभिः । मरीचेसेन्दुवारेचेर्चाचरेहृ-
द्यगंधके॥महिषेकोकिलाब्धावेयवेकष्ठमष्टसु। पिप्पली
नीलिकागोपाजज्जुकारीतुशिंशिपा ॥ सरसाजीरक
न्द्रीचकृष्णात्ताष्ट सुवर्त्तिनी । लनीतृत्तृतहिंश्रपिप्प
लीरक्तयष्टिषु ॥ वालायाजीरकेवापिकालोंप्रोक्ताविं-
चक्षणैः । मुद्गपर्णीकर्कोयचमहाचरःहस्तिकोशा-
तकी बालातरणीषुस्मृतासहापुनर्नवातृत्ट्वंडीश्रा-
वण्यतिविषातथा ॥ अरुणापंचसुप्रोक्ता तापसादि-
कमन्धिके । विदारीकटिभीस्यन्दाश्वेतद्दूर्वाचसा-
रिवा॥ खंङ्खीशर्करावालाश्वेतारक्तप्रकीर्तिता। अज
गंधामेषश्रृंगीनिर्गुण्डीकटुभीवच ॥ केशीद्दूर्वाद्वयं-
वापिगोलोम्यष्टसुवर्त्तते। सर्षपालुकस्तम्बपद्मकेशर
केधवे ॥ गौरीररोचनास्यासनश्रृम्भीप्रियंगुषु । कु-
ठेरकरजन्योश्च धनंचास्मंतकेपिके ॥ वंशोथश्या-
ममेघेषुतथारसकेपिच । नतकपासिकाद्दूर्वातथाज्यो
तिष्मतीस्थिरा । किंशुकश्चित्रिपर्णीतिपंचस्ववप्र-
कीर्तिता । जीवंतीत्रायमाणाचरोचनागंधपुष्पिका ॥

तुरणेसमीतुरग्राचमंगल्याचसुवर्त्ततेगुग्गुलुः स्थाव
णीप्रक्ष्यागांकंठेषुपलंकस्यासमंगाचाटकीबालावर्दः
तातित्यष्टयष्ठिषुजम्बीरकम्मरंगश्चनागरंगकापित्थ
कौदन्तशठातुमुशलाकपिकच्छयवाककैः॥ ख्याता
पंचसुखकराद्रव्यनिश्चयकारकैः। वाध्यशालेविदा
रीच श्वेतदूर्वाशनिश्चिता॥ विर्जंशुक्लशब्देनवःपरि
कीर्तितेच भिषग्वरैः। मंजिष्ठात्रिपुंसीदूर्वाशतक्ष्येति-
निश्चये॥ स्पृक्काकादिनीप्रेयाज्योतिष्मत्यालता-
बुधैः। चित्तकर्माणिसंकेतकपालेलावकेतथा॥ द्रव्ये
षुपंचकोलेवकंकोलेबंदरेतथा॥नक्षत्रसंज्ञकश्चैव कोल
शब्दविचक्षणाः॥इतीदमुक्तंनिखिलंनिघण्टज्ञानमु-
त्तमम्। भिषक्सिद्धिप्रवृत्त्यर्थं धन्वन्तरिजनिर्मि-
तम्॥ १॥ इति नानार्थवर्गः॥

इति श्रीमदनपालविरचिते मदनविनोदे निघन्टेनानार्थवर्गः समाप्तः॥